आवास भारती

वर्ष 24 | अंक 92 | जुलाई–सितम्बर, 2024

सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2024–विशेषांक

राष्ट्रीय आवास बैंक
NATIONAL HOUSING BANK

प्रधानमंत्री आवास योजना 2.0 – ब्याज सब्सिडी योजना घटक पर कार्यशाला एवं समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर कार्यक्रम की कुछ झलकियां

आवास भारती

राष्ट्रीय आवास बैंक की राजभाषा पत्रिका
(केवल आंतरिक परिचालन हेतु)

पंजी. संख्या, दिल्ली इन / 2001 / 6138

वर्ष 24, अंक 92, जुलाई-सितम्बर, 2024

प्रधान संरक्षक
संजय शुक्ला
प्रबंध निदेशक

संपादक
रंजन कुमार बरून
महाप्रबंधक

सहायक संपादक
शोभित त्रिपाठी
उप प्रबंधक

संपादक मंडल
पीयूष पाण्डेय, उप महाप्रबंधक
प्रभात रंजन, क्षेत्रीय प्रबंधक
दीपाली नंदन प्रसाद, क्षेत्रीय प्रबंधक
तुषार कुमार, प्रबंधक
यतीक्षा चौहान, प्रबंधक
अंकित पाठक, सहायक प्रबंधक

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचार, मौलिकता एवं तथ्य आदि लेखकों के अपने हैं। संपादक या बैंक का इनके लिए ज़िम्मेदार अथवा सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

राष्ट्रीय आवास बैंक
NATIONAL HOUSING BANK
(भारत सरकार के अंतर्गत सांविधिक निकाय)

कोर–5 ए,
इंडिया हैबीटेट सेन्टर,
लोधी रोड, नई दिल्ली–110003

विषय सूची

	विषय	पृष्ठ
1	राष्ट्रीय आवास बैंक की व्यवसायिक व अन्य गतिविधियां	7
2	सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि (विनीत सिंघल, महाप्रबंधक)	11
3	सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि (एस. पद्मावती, सहायक महाप्रबंधक)	14
4	सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि (नीतू, उप प्रबंधक)	17
5	सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि (सुभाष, सहायक महाप्रबंधक)	20
6	सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि (आरजू यादव, सहायक प्रबंधक)	23
7	राष्ट्र की समृद्धि में सत्यनिष्ठा का योगदान (राजेश कुमार, सहायक प्रबंधक)	28
8	राष्ट्रीय आवास वित्त एवं वित्तीय समावेशन (धीरज कुमार, क्षेत्रीय प्रबंधक)	31
9	शहरी आवास विकास में डिजिटल ट्विन प्रौद्योगिकी (डॉ. मोनिका भूटानी, पत्नी मुनीष भूटानी, सहायक महाप्रबंधक)	34
10	अफ्रीका में बेघरी से संघर्ष (जयदीप, सहायक प्रबंधक)	37
11	सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि (रिया केसरकर, सेण्ट बैंक होम फाइनेंस लिमिटेड)	40
12	सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि (सूर्य प्रताप राव रेपल्ली, सेण्ट बैंक होम फाइनेंस लिमिटेड)	43
13	सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि (एम. कीर्ति, युनिको हाऊसिंग फाइनेंस प्राइवेट लिमिटेड)	46

सत्यमेव जयते

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

प्रिय देशवासियों !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर–हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरू नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन–वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन–जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित होरही

है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय अटल बिहरी वाजपेयी जी ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू–कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान–विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन–जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम !

(अमित शाह)

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2024

हिंदी दिवस - 2024
प्रबंध निदेशक का सन्देश

प्रिय साथियों,

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सबको मेरी हार्दिक शुभकामनाएं!

हमारी भाषा हमारे विचारों के साथ राष्ट्र के सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की संवाहिका के रूप में भूमिका निभाती है। भाषा समाज एवं राष्ट्र के विकास में आधार स्तम्भ का कार्य करती है और यदि भाषा हिन्दी जैसी सरल एवं सुगम हो तो समावेशी विकास के कार्य में सहायक सिद्ध होती है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने भी कहा था कि, ''राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।'' देश भाषायी विविधता एवं विभिन्न संस्कृतियों के होते हुए भी एकता के सूत्र में बंधा हुआ है। इस एकता के सूत्र को प्रगाढ़ करने में भाषा ने निश्चय ही एक सार्थक भूमिका निभाई है।

देश की स्वतंत्रता के पश्चात् संविधान सभा द्वारा 14 सितम्बर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी भाषा को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। इस शुभ अवसर को प्रत्येक वर्ष 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

मुझे हर्ष है कि प्रत्येक वर्ष की परंपरा अनुसार इस वर्ष भी राष्ट्रीय आवास बैंक के प्रधान कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में हिन्दी मास/पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है। इस आयोजन के अंतर्गत बैंक द्वारा अधिकारियों को हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करने हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। प्रतियोगिताओं के आयोजन का उद्देश्य अधिकारियों को मूलरूप से हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रेरित एवं प्रोत्साहित करना है जिससे कि राजभाषा नीति की मूल भावना के अनुरूप ही प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के साथ राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर विकास में बैंक के अधिकारियों द्वारा योगदान दिया जा सके।

राजभाषा हिन्दी में कार्य करना न केवल हमारा संवैधानिक दायित्व है अपितु नैतिक दायित्व भी है। मैं आप सभी से इस अवसर पर यह अपील करूँगा कि आप सभी अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन करें एवं अपना शत–प्रतिशत कार्य हिन्दी भाषा में करें।

संजय शुक्ला

(संजय शुक्ला)
प्रबंध निदेशक

महाप्रबंधक का संदेश ...

प्रिय पाठकगण,

मुझे राष्ट्रीय आवास बैंक का 92वां अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इस अंक में विशेष रूप से बैंक में आयोजित सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2024 के अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की रूपरेखा, विशेष आलेख संचयन आदि गतिविधियों का उल्लेख प्रमुखता से किया गया है। इसके अतिरिक्त बैंक में 14 सितम्बर, 2024 से 14 अक्टूबर, 2024 तक हिन्दी मास मनाया गया। मास के दौरान आयोजित गतिविधियों की झलकियां भी अंक में प्रकाशित की गयी हैं।

मैं पिछले 25 वर्षों से अधिक से बैंक में मनाये जाने वाले हिंदी मास का साक्षी रहा हूँ और मैंने देखा है कि बैंक में राजभाषा गतिविधियों में उत्तरोत्तर प्रगति देखने को मिली है। राष्ट्रीय आवास बैंक आवास भारती का स्वर्णिम इतिहास रहा है। पत्रिका को नगर राजभाषा कार्यन्वयन समिति, दिल्ली बैंक एवं भारतीय रिजर्व बैंक से विभिन्न पुरस्कार प्राप्त होते रहें हैं जो कि पत्रिका की गुणवत्ता को दर्शाता है। हमारा प्रयास रहा है कि पत्रिका में तकनीकी लेखों का संकलन किया जाए एवं मुख्यतया सरल और सीधी भाषा में इनकी प्रस्तुति की जाए जिससे आर्थिकी, बैंकिंग, आवास क्षेत्र एवं अन्य तकनीकी विषयों पर सारगर्भित जानकारी उपलब्ध हो सके। वर्तमान में बैंक में अधिकारियों की संख्या बढ़ रही है तथा इसी के साथ राजभाषा हिंदी का दायरा भी बढ़ रहा है।

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि सभी अधिकारी पूरी निष्ठा एवं तत्परता के साथ राजभाषा हिंदी में कार्य कर रहे हैं, बैंक की वेबसाइट पूर्णतया द्विभाषी है, माननीय संसदीय राजभाषा समिति ने भी पूर्व के निरीक्षण में बैंक की राजभाषा प्रगति पर संतोष व्यक्त किया है। यह सही है कि पानी हमेशा ऊपर से नीचे की ओर बहता है चूँकि बैंक के प्रबंध निदेशक सहित सभी वरिष्ठ अधिकारीगण भी राजभाषा हिन्दी के कार्य को तरजीह देते हैं इसी के परिणामस्वरूप राजभाषा हिंदी के कार्यों में चौमुखी प्रगति हुई है। आज देश के हर कोने से अधिकारी आकर हमारे प्रधान कार्यालय और क्षेत्रीय कार्यालयों में कार्य करते हैं एवं इससे विभिन्न संस्कृतियों का संगम होते हुए भी हमें देखने को मिलता है।

बैंक द्वारा आयोजित सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2024 के दौरान विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गयीं जैसे निबंध लेखन, पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता, बैडमिंटन प्रतियोगिता, क्विज प्रतियोगिता आदि। हमें विशेष रूप से निबंध प्रतियोगिता में देश के हर कोने से आलेख प्राप्त हुए एवं एक से बढ़कर एक आलेखों में से सर्वश्रेष्ठ का चयन करना हमारे लिए एक चुनौती थी। इस अंक में पुरस्कृत 8 आलेखों को स्थान दिया गया है। इसके अतिरिक्त अन्य गतिविधियों को भी पत्रिका के इस अंक में कवर किया गया है।

मुझे यह भी उल्लेख करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि आवास भारती के विश्व पर्यावास दिवस के विशेष अंक का विमोचन दिनांक 9 अक्टूबर, 2024 को माननीय आवासन एवं शहरी कार्य राज्य मंत्री महोदय श्री तोखन साहू जी द्वारा किया गया एवं इसकी कुछ झलकियां आपको इस अंक में देखने को मिलेगी। हमारा पूर्व की तरह यह प्रयास रहेगा कि आने वाले अंकों में बेहतर लेखों का संकलन किया जाए एवं आपकी प्रतिक्रिया के अनुरूप पत्रिका को और अधिक उपयोगी बनाया जा सके।

(रंजन कुमार बरुन)
महाप्रबंधक

श्री संजय शुक्ला, प्रबंध निदेशक

राष्ट्रीय आवास बैंक का संक्षिप्त परिचय

श्री संजय शुक्ला ने राष्ट्रीय आवास बैंक के प्रबंध निदेशक के रूप में 30 जुलाई, 2024 को कार्यभार ग्रहण कर लिया है। श्री संजय शुक्ला आवास वित्त क्षेत्र में 30 वर्षों से अधिक का व्यापक अनुभव रखते हैं। श्री संजय शुक्ला एक चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं। श्री शुक्ला के पास महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थानों को संभालने का एक सफल ट्रैक रिकॉर्ड रहा है। उन्होंने 1991 में एलआईसी हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड में एक अधिकारी के रूप में अपना करियर शुरू किया।

श्री शुक्ला ने राष्ट्रीय आवास बैंक में अपनी नियुक्ति से पहले, अक्टूबर 2016 से सेंट्रम हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड के संस्थापक प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी के रूप में कार्य किया। उनके नेतृत्व में, सेंट्रम हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड ने महत्वपूर्ण प्रगति की। सेंट्रम हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड से पहले, वह सेंट बैंक होम फाइनेंस लिमिटेड के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी थे, जहां उन्होंने सफलतापूर्वक कंपनी का कायाकल्प किया और सफल प्रबंधन के तहत कंपनी की परिसंपत्ति को तीन गुना कर दिया और केवल तीन वर्षों के भीतर रिटेल एसेट गुणवत्ता में महत्वपूर्ण सुधार किया।

टाटा कैपिटल में बिजनेस हेड के रूप में के रिटेल हाउसिंग फाइनेंस बिजनेस को प्रारम्भ करने में प्रमुख भूमिका निभाई। श्री शुक्ला के करियर में आईएनजी वैश्य बैंक में कंस्यूमर एसेट के बिजनेस हेड जैसी महत्वपूर्ण भूमिकाएं भी शामिल हैं, जहां उन्होंने कंस्यूमर लोन वर्टिकल की स्थापना और इसके विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अतिरिक्त, श्री शुक्ला ने सिटी बैंक में आठ साल कार्य किया, जहां उन्होंने उपाध्यक्ष और एरिया डायरेक्टर का पद संभाला, जो टियर 2 और टियर 3 शहरों में आवास वित्त आदि का कार्य देखा करते थे।

राष्ट्रीय आवास बैंक परिवार उनका सहृदय स्वागत करता है एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

"राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।"

— महात्मा गांधी

राष्ट्रीय आवास बैंक की व्यावसायिक व अन्य गतिविधियां

कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय
26 जुलाई, 2024 पंच प्राण संकल्प के अंतर्गत
किफायती आवास पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

भोपाल क्षेत्रीय कार्यालय
31 जुलाई, 2024
पंच प्राण संकल्प के अंतर्गत वृक्षारोपण अभियान

चेन्नई क्षेत्रीय कार्यालय
02 अगस्त, 2024
पंच प्राण संकल्प के तहत वृक्षारोपण अभियान

बेंगलुरु क्षेत्रीय कार्यालय 02 अगस्त, 2024 पंच प्राण लक्ष्यों के अंतर्गत निर्बाध ऋण प्रसंस्करण और ग्राहक सेवाके लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म के कार्यान्वयन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

गुवाहाटी क्षेत्रीय कार्यालय
03 अगस्त, 2024
पंच प्राण संकल्प के अंतर्गत चित्रकला प्रतियोगिता

त्रिवेंद्रम क्षेत्रीय कार्यालय
03 अगस्त, 2024
पंच प्राण संकल्प के अंतर्गत चित्रकला प्रतियोगिता

हैदराबाद क्षेत्रीय कार्यालय
05 अगस्त, 2024
पंच प्राण संकल्प के अंतर्गत आशुभाषण प्रतियोगिता

रांची क्षेत्रीय कार्यालय
06 अगस्त, 2024
पंच प्राण संकल्प के अंतर्गत चित्रकला प्रतियोगिता

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय
06 अगस्त, 2024
पंच प्राण संकल्प के अंतर्गत पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता

दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय
06 अगस्त, 2024
पंच प्राण संकल्प के अंतर्गत पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता

भुवनेश्वर क्षेत्रीय कार्यालय
06 अगस्त, 2024
पंच प्राण संकल्प के अंतर्गत वृक्षारोपण कार्यक्रम

लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय
06 अगस्त, 2024
पंच प्राण संकल्प के अंतर्गत वृक्षारोपण कार्यक्रम

रायपुर क्षेत्रीय कार्यालय
07 अगस्त, 2024
पंच प्राण संकल्प के अंतर्गत आशुभाषण प्रतियोगिता

पटना क्षेत्रीय कार्यालय
07 अगस्त, 2024
पंच प्राण संकल्प के अंतर्गत चित्रकला प्रतियोगिता

मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय
07 अगस्त, 2024 पंच प्राण संकल्प के तहत किफायती आवास के लिए ऋण मूल्यांकन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

चंडीगढ़ क्षेत्रीय कार्यालय
08 अगस्त, 2024
पंच प्राण संकल्प के अंतर्गत पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता

गुवाहाटी क्षेत्रीय कार्यालय
18 सितंबर, 2024 स्वच्छता ही सेवा अभियान 2024 के अंतर्गत अपशिष्ट से कला प्रतियोगिता

दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय
19 सितंबर, 2024 स्वच्छता ही सेवा अभियान 2024 के अंतर्गत अपशिष्ट से कला प्रतियोगिता

हैदराबाद क्षेत्रीय कार्यालय
20 सितंबर, 2024 स्वच्छता ही सेवा अभियान
2024 के अंतर्गत वृहत सफाई अभियान

लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय
20 सितंबर, 2024 स्वच्छता ही सेवा अभियान
2024 के अंतर्गत वृहत सफाई अभियान

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय
20 सितंबर, 2024
स्वच्छता ही सेवा अभियान 2024 के तहत वॉकथॉन

कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय
21 सितंबर, 2024 स्वच्छता ही सेवा अभियान 2024
के अंतर्गत वृहत सफाई अभियान

चेन्नई क्षेत्रीय कार्यालय
24 सितंबर, 2024 स्वच्छता ही सेवा अभियान
2024 के अंतर्गत अपशिष्ट से कला प्रतियोगिता

रांची क्षेत्रीय कार्यालय
24 सितंबर, 2024 स्वच्छता ही सेवा अभियान
2024 के अंतर्गत अपशिष्ट से कला प्रतियोगिता

पटना क्षेत्रीय कार्यालय
25 सितंबर, 2024
स्वच्छता ही सेवा अभियान 2024 के तहत वॉकथॉन

तिरुवनंतपुरम क्षेत्रीय कार्यालय
25 सितंबर, 2024 स्वच्छता ही सेवा अभियान
2024 के अंतर्गत अपशिष्ट से कला प्रतियोगिता

रायपुर क्षेत्रीय कार्यालय
25 सितंबर 2024
स्वच्छता ही सेवा अभियान 2024 के अंतर्गत वॉकथॉन

भोपाल क्षेत्रीय कार्यालय
26 सितंबर, 2024 स्वच्छता ही सेवा अभियान
2024 के अंतर्गत वृहत सफाई अभियान

प्रधान कार्यालय
27 सितंबर, 2024
सफाई मित्रों के लिए निवारक स्वास्थ्य जांच शिविर

बेंगलुरु क्षेत्रीय कार्यालय
27 सितंबर, 2024
स्वच्छता ही सेवा अभियान 2024 के तहत वॉकथॉन

भुवनेश्वर क्षेत्रीय कार्यालय
28 सितंबर, 2024 स्वच्छता ही सेवा अभियान
2024 के अंतर्गत वृहत सफाई अभियान

मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय
28 सितंबर, 2024 स्वच्छता ही सेवा अभियान
2024 के अंतर्गत वृहत सफाई अभियान

चंडीगढ़ क्षेत्रीय कार्यालय
30 सितंबर, 2024 स्वच्छता ही सेवा अभियान
2024 के अंतर्गत अपशिष्ट से कला प्रतियोगिता

"हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद–भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।"

– पंडित मदनमोहन मालवीय

सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि

– विनीत सिंघल,
महाप्रबंधक
प्रथम पुरस्कार, निबंध प्रतियोगिता

"विकास मात्र समय का कार्य नहीं है; यह सत्यनिष्ठा का कार्य है।"

डॉ. जॉन सी. मैक्सवेल

क्या सत्यनिष्ठा की संस्कृति स्थापित हो सकती है?

मूल्य वे मूल विश्वास और सिद्धांत हैं जो हमारे कार्यों व निर्णयों का मार्गदर्शन करते हैं। यदि किसी के लिए सत्यनिष्ठा मुख्य मूल्य है, तो उसके द्वारा नेक कार्य भी अवश्य ही किए जाएंगे। इस व्यवहार से समाज में लोगों के बीच विश्वास का निर्माण होता है। सभी मूल्य परिस्थितियों के अनुसार बदल जाते हैं। लेकिन सत्यनिष्ठा हमेशा बनी रहती है। सत्यनिष्ठा का अर्थ है हर समय व हर परिस्थिति में उचित कार्य करना, चाहे कोई देख रहा हो या नहीं। उचित कार्य करने के लिए साहस होना चाहिए, चाहे परिणाम कुछ भी हों। सत्यनिष्ठा की प्रतिष्ठा बनाने में वर्षों लग जाते हैं, लेकिन इसे खोने में बस एक सेकेंड भी काफी है।

हम एक ऐसे विश्व में रह रहे हैं जहाँ "अंतिम परिणाम को उचित ठहराने" वाली विचारधारा बहुत से लोगों के लिए स्वीकार्य विचारधारा बन गई है। उद्यमी अपने प्रोफॉर्मा को बढ़ा–चढ़ाकर बताते हैं क्योंकि वे निवेशक से उच्चतम संभव कीमत चाहते हैं। निवेशक किसी सौदे में कम कीमत पर बातचीत करने के लिए कंपनी के मूल्य को कम आंकते हैं। सूची लंबी होती जा सकती है, और प्रत्येक मामले में बेईमानी का कार्य करने वाले व्यक्ति को वास्तव में विश्वास था कि उनके पास एक पूरी तरह से वैध कारण था जो अंतिम परिणाम को उचित ठहराता था।

सत्यनिष्ठा की कमी उस विशेष क्षण में तात्कालिक संतुष्टि तो प्रदान कर सकती है, लेकिन यह स्थायी नहीं होगी। ऐसे कई उदाहरण हैं जहां लोग सत्यनिष्ठा के बिना भी सफल होते हैं और कभी पकड़े नहीं जाते, जिससे सफलता के मार्ग के बारे में गलत धारणा बनती है कि हमें भी उनका अनुसरण करना चाहिए। हालाँकि, उस क्षणिक परिणाम की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है और इसके दूरगामी परिणाम होते हैं। वह व्यक्ति सत्यनिष्ठ व्यक्ति के रूप में विश्वासयोग्य होने की अपनी क्षमता खो देता है, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में सबसे मूल्यवान गुण है। मुद्रा या शक्ति के संदर्भ में लाभ अस्थायी है, लेकिन उन लोगों के नेटवर्क में सामाजिक लाभ, जो आप पर एक ईमानदार व्यक्ति के रूप में भरोसा करते हैं, स्थायी है।

यदि आप सत्यनिष्ठ व्यक्ति के रूप में अपनी प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहते हैं, तो आप अपने आसपास सत्यनिष्ठ व्यक्तियों को रखें और सत्यनिष्ठा की संस्कृति को स्थापित करें।

राष्ट्र की समृद्धि का मापन

किसी राष्ट्र की संपत्ति का सबसे सामान्य माप सकल घरेलू उत्पाद या जीडीपी है। जीडीपी किसी देश के भीतर उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को मापता है। हालाँकि जीडीपी और इसके परिवर्तन किसी भी देश के समग्र आर्थिक उत्पादन के सबसे लोकप्रिय संकेतक हैं, लेकिन यह समग्र आर्थिक कल्याण का एक अपूर्ण उपाय है। उदाहरण के लिए, जीडीपी किसी देश के नागरिकों की सामाजिक और मानसिक भलाई या उस देश की प्रशासनिक मशीनरी में लोगों द्वारा अपनाए गए मूल्यों और नैतिकता की सीमा को ध्यान में नहीं रखता है। नागरिकों की भलाई से जुड़े सामाजिक आराम और खुशी जैसे अन्य कारकों को भी नजरअंदाज कर दिया जाता है।

इस वजह से, विभिन्न सरकारों और संगठनों ने राष्ट्र की समृद्धि के वैकल्पिक माप प्रणालियों जैसे मानव विकास सूचकांक, बेहतर जीवन सूचकांक और वास्तविक प्रगति संकेतक का पालन करना आरंभ कर दिया है। हवाई, मैरीलैंड और वर्मोंट जैसे देशों ने वास्तविक प्रगति सूचक को लागू करना आरंभ कर दिया है।

वास्तविक प्रगति संकेतक (जीपीआई) को आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक कारकों को ध्यान में रखते हुए किसी देश की भलाई को मापने के लिए बनाया गया है। प्रत्येक पहलू के कारक जीपीआई का

उपयोग करने वाले देश के आधार पर भिन्न हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, सकल राष्ट्रीय खुशहाली यूएसए वेबसाइट पर दिखाया गया संस्करण हवाई द्वारा उपयोग किए जाने वाले संस्करण से अलग है। आर्थिक पहलू में व्यक्तिगत व्यय और आय असमानता जैसे कारक शामिल हो सकते हैं। पर्यावरणीय पहलू के लिए, सूचकांक में ज्यादातर ओजोन क्षरण और जलवायु परिवर्तन जैसे कारक शामिल होते हैं। सामाजिक पहलू में अपराध, पारिवारिक विघटन और मूल्य शामिल हैं।

इस प्रकार, धीरे–धीरे अधिक से अधिक देश वैकल्पिक उपायों का उपयोग करके अपनी समृद्धि को माप रहे हैं जो अन्य बातों के साथ–साथ मूल्यों और नैतिकता को प्रमुखता देते हैं।

सत्यनिष्ठा की संस्कृति राष्ट्र की समृद्धि को बढ़ावा देती है

राष्ट्र की समृद्धि अक्सर आर्थिक स्थिरता, नैतिक नेतृत्व और सामाजिक मूल्यों सहित कई कारकों के संयोजन पर निर्भर करती है। जब इन तत्वों को संतुलित और पोषित किया जाता है, तो वे किसी राष्ट्र के लिए स्थायी समृद्धि का कारण बन सकते हैं। कहा जाता है,"कर्म किए जा, फल की चिंता मत कर"।

सत्यनिष्ठा विश्वास का वातावरण निर्मित करती है, जिससे निवेशकों का विश्वास तथा आर्थिक विकास बढ़ता है: सत्यनिष्ठा आर्थिक विकास की आधारशिला है। विश्वास को बढ़ावा देकर, प्रतिष्ठा को बढ़ाकर, भ्रष्टाचार को कम करके, सहयोग को प्रोत्साहित करके, प्रतिभा को आकर्षित करके और स्थिरता को बढ़ावा देकर, सत्यनिष्ठा एक ऐसा वातावरण निर्मित करती है जहां व्यवसाय फल–फूल सकें और अंततः समग्र रूप से अर्थव्यवस्था को लाभ पहुंचा सकें। विविध उद्योगों द्वारा संचालित एक मजबूत अर्थव्यवस्था रोजगार प्रदान कर सकती है और जीवन स्तर में सुधार कर सकती है।

यदि कोई व्यवसाय पारदर्शी तरीके से संचालित होता है, तो यह निवेश को आकर्षित करता है। निवेश नवाचार और विस्तार को बढ़ावा देता है। इसी प्रकार, जो संगठन नैतिक रूप से कार्य करते हैं, उन्हें निवेशकों की निष्ठा प्राप्त होती है।

नैतिक व्यवसाय अपने ब्रांड मूल्य को बढ़ाते हैं जिसके माध्यम से वे अपने उत्पादों व सेवाओं के लिए अपने साथियों की तुलना में अधिक कीमत प्राप्त करते हैं। जो ग्राहक नैतिकता को प्राथमिकता देते हैं वे ऐसे व्यावसायिक संगठनों की ओर आकर्षित होते हैं।

भ्रष्टाचार संसाधनों को खत्म करता है और लागत बढ़ाता है। नैतिक आचरण भ्रष्टाचार और लागत को कम करता है। सत्यनिष्ठा के प्रति प्रतिबद्धता व्यवसायों को बाजार में समान अवसर प्रदान करती है, जिससे योग्यता के आधार पर प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा मिलता है जिससे बाजार में नवाचार होता है।

विदेशी हितधारक उन देशों के साथ सहयोग करने के लिए अधिक इच्छुक हैं जो सत्यनिष्ठा को प्राथमिकता देते हैं। यह नए विचारों को देश में प्रवाहित करने में सक्षम बनाता है जिससे नए अवसर और पहल को बढ़ावा मिलता है।

कर्मचारी किसी भी व्यवसाय की आधारशिला होते हैं। किसी व्यावसायिक संगठन में नैतिक आचरण से कर्मचारियों की सहभागिता बढ़ती है तथा उत्पादकता में वृद्धि होती है। ऐसे संगठन कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (सीएसआर) गतिविधियों में भी शामिल होते हैं और समग्र आर्थिक स्थिरता में योगदान देते हैं।

नैतिक नेतृत्व मजबूत व्यावसायिक संगठनों का निर्माण करता है: नैतिक नेतृत्व का ध्यान सदैव दीर्घकालिक दृष्टिकोण के विकास पर होता है। भ्रष्टाचार तब पनपता है जब अल्पकालिक लाभ प्राप्त करने की कोशिश की जाती है। लीडर विश्वास और पारदर्शिता का माहौल बनाकर मजबूत संगठन का निर्माण करते हैं। ये लीडर ऐसे मानक निर्धारित करते हैं जो अन्य व्यावसायिक संगठनों के लिए अनुकरणीय बेंचमार्क का कार्य करते हैं।

ऐसा संगठन अपने कर्मचारियों को नैतिक शिक्षा प्रदान करने में विश्वास रखता है, जिससे उन्हें अपने व्यापारिक संस्थाओं में भ्रष्टाचार विरोधी नीतियां विकसित करने में मदद मिलती है। इन संगठनों में मुखबिर नीतियों का विकास, नियमित लेखा परीक्षा और निगरानी की प्रणाली से सर्वोत्तम प्रथाओं का पालन किया जाता है। इससे उन अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के साथ अधिक सहयोग को बढ़ावा मिलता है जो नैतिक नेतृत्व में विश्वास रखते हैं। सरकार भी ऐसी नैतिक व्यावसायिक संस्थाओं को उचित रूप से मान्यता देती है और उन्हें देश के विकास में भागीदार बनाती है।

सामाजिक मूल्य समग्र सामाजिक समृद्धि को बढ़ावा देते हैं: सांस्कृतिक मानदंड और सामाजिक मूल्य यह निर्धारित करते हैं कि व्यक्ति सफलता को किस प्रकार देखता है। समाज द्वारा अपनाए गए ईमानदारी और कड़ी मेहनत जैसे कुछ मूल्य लोगों को सामाजिक कल्याण में योगदान करने के लिए प्रेरित करते हैं।

यदि कोई समाज विविधता में समानता जैसे सामाजिक मूल्यों को प्राथमिकता देता है, तो नागरिकों में सशक्तिकरण की भावना जागृत होती है जो उन्हें आर्थिक अवसरों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करती है।

सामाजिक समानता व्यक्तियों के बीच अपनेपन की भावना को बढ़ावा देती है, जिससे कौशल विकास चाहने वाले कार्यबल का निर्माण होता है। यह, बदले में, एक सक्षम कार्यबल की आलोचनात्मक सोच और विकास को बढ़ावा देता है जो आर्थिक विकास को गति देता है। इस प्रकार का कार्यबल वह होता है जो गतिशील आर्थिक परिदृश्यों के साथ आसानी से अनुकूलन कर लेता है, तथा वंचित पृष्ठभूमि के व्यक्तियों को अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने का अवसर प्रदान करता है।

मूल्यों में विश्वास रखने वाली सरकार के नेतृत्व में उच्च मनोबल वाली प्रेरित जनसंख्या शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सेवाओं में अधिक निवेश को प्रोत्साहित करती है। इससे कार्यबल की उत्पादकता में वृद्धि और बेहतर जीवन स्थितियों के लिए वातावरण को बढ़ावा मिलता है, जिससे आर्थिक विकास और राष्ट्र की समृद्धि को बढ़ावा मिलता है।

निष्कर्ष

ईमानदारी को केवल एक गुण के रूप में नहीं पहचाना जाना चाहिए बल्कि इसे भावी पीढ़ियों में एक निवेश के रूप में देखा जाना चाहिए। यह एक ऐसा चक्र है जिसमें मजबूत सामाजिक मूल्य नैतिक नेतृत्व के माध्यम से भरोसेमंद संगठनों का निर्माण करते हैं, समृद्धि की ओर ले जाते हैं जो पुनः सकारात्मक सामाजिक मूल्यों को सुदृढ़ करता है।

नैतिकता सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देती है जिससे समाज के वंचित वर्गों को समान पहुंच मिलती है। इससे सहयोग की संस्कृति को बढ़ावा मिलता है जिससे राष्ट्र की समृद्धि होती है।

"नियुक्ति के लिए व्यक्ति की खोज करते वक्त, तीन गुणों पर ध्यान दें: सत्यनिष्ठा, बुद्धिमत्ता और ऊर्जा। और अगर उनमें पहला गुण नहीं है, तो बाकी दो गुण आपको मार देंगे।"

वॉरेन बफेट

"हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।"

– स्वामी दयानन्द

सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि

– एस. पद्मावती,
सहायक महाप्रबंधक
द्वितीय पुरस्कार, निबंध प्रतियोगिता

परिचय

"सत्यनिष्ठा सही काम करना है, तब भी जब कोई देख नहीं रहा हो" – सी.एस. लुईस

सत्यनिष्ठा खड़े होने, सामना करने और खुद से सच कहने की शक्ति है। एक व्यक्ति जो अच्छे और बुरे के बीच अंतर को समझ सकता है और सही विकल्प चुन सकता है, भले ही वह कोई भी निर्णय लेने के लिए अनुकूल स्थिति में हो, वह सत्यनिष्ठ व्यक्ति है।

सत्यनिष्ठा, जिसे नैतिक और नैतिक सिद्धांतों के पालन के रूप में परिभाषित किया जाता है, केवल एक व्यक्तिगत गुण नहीं है; यह वह आधार है जिस पर सफल समाजों का निर्माण होता है। यह नागरिकों के बीच विश्वास को बढ़ावा देता है, सहयोग को बढ़ाता है, और शासन और व्यवसाय में पारदर्शिता को बढ़ावा देता है। यह कानून के शासन के लिए आधारभूत है और सामाजिक सामंजस्य के लिए आवश्यक है।

भारत, विविध संस्कृतियों और परंपराओं की भूमि और कई दूरदर्शी नेताओं का जन्मस्थान रहा है जिन्होंने विश्व मंच पर एक अमिट छाप छोड़ी है।

अपनी अटूट सत्यनिष्ठा के लिए जाने जाने वाले महात्मा गांधी ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अपने नैतिक नेतृत्व से लाखों लोगों को प्रेरित किया।

सरदार पटेल का पूरा जीवन ईमानदारी, पारदर्शिता और इन मूल्यों पर आधारित लोक सेवा व्यवस्था के निर्माण के लिए समर्पित रहा।

इन भारतीय नेताओं की सफलता की कहानियाँ जीवन को बदलने और समाज को प्रभावित करने में दूरदर्शिता, दृढ़ संकल्प और नेतृत्व की शक्ति को उजागर करती हैं।

सत्यनिष्ठा की संस्कृति को बढ़ावा देना

सार्वजनिक नीतियों में सत्यनिष्ठा एक सुदृढ़ सार्वजनिक शासन प्रणाली की आधारशिला है। सार्वजनिक हित में और समाज की समृद्धि और कल्याण के लिए शासन करना महत्वपूर्ण है। हालाँकि, कोई भी देश सत्यनिष्ठा के उल्लंघन से अछूता नहीं है, और भ्रष्टाचार सबसे चुनौतीपूर्ण मुद्दों में से एक है। संयुक्त राष्ट्र मादक पदार्थ एवं अपराध कार्यालय (यूएनओडीसी), यूएनडीईएसए, यूएनडीपी, आईएमएफ, विश्व बैंक और एशियाई और अफ्रीकी विकास बैंक और ओईसीडी जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठन सत्यनिष्ठा की संस्कृति के प्रबल समर्थक हैं।

सत्यनिष्ठा व्यवसाय के लिए समान अवसर पैदा करके आर्थिक विकास को बढ़ावा देती है, सामाजिक–आर्थिक असमानताओं को कम करने में मदद करती है, और पर्यावरणीय स्थिरता लक्ष्यों का समर्थन करती है। सत्यनिष्ठा को मजबूत करने से सार्वजनिक नीतियों को अधिक प्रभावी बनाने में भी मदद मिलती है और सार्वजनिक नीतियों की दक्षता और वैधता बढ़ती है ।

सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) का 2030 एजेंडा अखंडता की बहुआयामी प्रकृति, घरेलू और अंतरराष्ट्रीय एजेंडों के बीच संबंधों को नई गति प्रदान करने और नागरिक समाज को शामिल करने के लिए एक अवसर प्रदान करता है।

एसडीजी ढांचे के भीतर, एसडीजी 16 – "शांति, न्याय और मजबूत संस्थान" – में सभी प्रकार के भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी को कम करने (16.5), सभी स्तरों पर प्रभावी, जवाबदेह और पारदर्शी संस्थानों को विकसित करने (16.6), अवैध वित्तीय प्रवाह को कम करने (16.4) और उत्तरदायी, समावेशी, भागीदारी और प्रतिनिधि निर्णय लेने को सुनिश्चित करने (16.7) की प्रतिबद्धताएं शामिल हैं।

भ्रष्टाचार और सार्वजनिक निर्णय लेने में सत्यनिष्ठा की कमी भी समावेशी विकास (एसडीजी 8 और 11) के लिए खतरा है, आर्थिक और सामाजिक असमानताओं को बढ़ाती है (एसडीजी 10), सार्वजनिक सेवाओं के प्रभावी वितरण में बाधा डालती है और लोकतंत्र के मूल्यों को कमजोर करती है।

इसी तरह, स्वास्थ्य (एसडीजी 3), शिक्षा (एसडीजी 4), लैंगिक समानता (एसडीजी 5), जलवायु कार्रवाई और पर्यावरण नीतियों (एसडीजी 13, 14, 15) के साथ–साथ जल और स्वच्छता (एसडीजी 6)

जैसे कई क्षेत्रों में प्रभावी नीतियों को लागू करने और स्थायी सुधार प्राप्त करने के लिए सत्यनिष्ठा आवश्यक है।

भ्रष्टाचार से लड़ना और सत्यनिष्ठा को बढ़ावा देना सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है। इस दृष्टिकोण से, देश अपनी भ्रष्टाचार विरोधी रणनीतियों को अन्य राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के साथ संरेखित करने के लिए अलग–अलग तरीकों पर काम कर रहे हैं – कानून और कानून प्रवर्तन का उपयोग करने से लेकर नागरिक समाज और व्यवसायों को संगठित करने तक।

देशों की पहल

थाईलैंड, लिथुआनिया, इंडोनेशिया और यूनाइटेड किंगडम जैसे देशों ने बड़े पैमाने पर सत्यनिष्ठा को बढ़ावा दिया है तथा अपनी नीतियों में तथा सरकारी और निजी क्षेत्र में भ्रष्टाचार विरोधी दृष्टिकोण अपनाया है।

भारत सरकार ने "भ्रष्टाचार के विरुद्ध शून्य सहनशीलता" की अपनी प्रतिबद्धता के अनुसरण में भ्रष्टाचार से निपटने के लिए कई उपाय किए हैं, जिनमें अन्य बातों के साथ–साथ निम्नलिखित शामिल हैं:

(i) पारदर्शी नागरिक–अनुकूल सेवाएं प्रदान करने और भ्रष्टाचार को कम करने के लिए प्रणालीगत सुधार। इनमें, अन्य बातों के साथ–साथ, शामिल हैं:

- प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण पहल के माध्यम से पारदर्शी तरीके से सरकार की विभिन्न योजनाओं के तहत नागरिकों को सीधे कल्याणकारी लाभों का वितरण।
- सार्वजनिक खरीद में ई–टेंडरिंग का कार्यान्वयन।
- ई–गवर्नेंस की शुरूआत तथा प्रक्रिया एवं प्रणालियों का सरलीकरण।
- सरकारी ई–मार्केटप्लेस (जीईएम) के माध्यम से सरकारी खरीद की शुरूआत।

(ii) भारत सरकार में ग्रुप 'बी' (अराजपत्रित) और ग्रुप 'सी' पदों की भर्ती में साक्षात्कार बंद करना। जनहित में सेवा से सेवानिवृत्त करने हेतु उन अधिकारियों के लिए एफआर–56 (जे) और एआईएस (डीसीआरबी) नियम, 1958 को लागू करना जिनके प्रदर्शन की समीक्षा की गई है और उसे असंतोषजनक पाया गया है।

(iii) अनुशासनात्मक कार्यवाही से संबंधित प्रक्रिया में विशिष्ट समयसीमा प्रदान करने के लिए अखिल भारतीय सेवा (अनुशासनात्मक और अपील) नियम तथा केंद्रीय सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण और अपील) नियमों में संशोधन किया गया है।

(iv) भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 में 26.07.2018 को संशोधन किया गया है। यह स्पष्ट रूप से रिश्वत देने के कृत्य को अपराध मानता है और वाणिज्यिक संगठनों के वरिष्ठ प्रबंधन के संबंध में एक परोक्ष दायित्व बनाकर बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार को रोकने में मदद करेगा।

(v) केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) ने विभिन्न आदेशों और परिपत्रों के माध्यम से प्रमुख खरीद गतिविधियों में सभी संगठनों को सत्यनिष्ठा समझौते को अपनाने की सिफारिश की है तथा जहां कहीं भी कोई अनियमितता/कदाचार देखा जाता है, वहां प्रभावी और शीघ्र जांच सुनिश्चित करने की सिफारिश की है।

(vi) लोकपाल संस्था को अध्यक्ष और सदस्यों की नियुक्ति के माध्यम से क्रियान्वित किया गया है। लोकपाल को भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 के तहत लोक सेवकों के विरुद्ध कथित अपराधों के संबंध में सीधे शिकायतें प्राप्त करने और उन पर कार्रवाई करने का वैधानिक अधिकार प्राप्त है।

एक सर्वोच्च सत्यनिष्ठ संस्था के रूप में केन्द्रीय सतर्कता आयोग ने भ्रष्टाचार से निपटने के लिए बहुआयामी रणनीति और दृष्टिकोण अपनाया है, जिसमें दंडात्मक, निवारक और सहभागी सतर्कता शामिल है।

सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि

सत्यनिष्ठा की संस्कृति का सामाजिक और आर्थिक विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यह सरकारी प्रशासन की दक्षता में सुधार, संसाधन आवंटन को अनुकूलित करने और सामाजिक विश्वास को बढ़ाने के माध्यम से स्थिर आर्थिक विकास और सामाजिक सद्भाव और स्थिरता को सीधे बढ़ावा देता है। सत्यनिष्ठा की संस्कृति का अस्तित्व और प्रचार भ्रष्टाचार को कम कर सकता है, सार्वजनिक संसाधनों के तर्कसंगत उपयोग को सुनिश्चित कर सकता है, निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा का बाजार वातावरण बना सकता है, इस प्रकार अधिक निवेश आकर्षित कर सकता है, बाजार की जीवंतता को उत्तेजित कर सकता है, तकनीकी नवाचार और औद्योगिक उन्नयन

को बढ़ावा दे सकता है, और निरंतर और स्वस्थ आर्थिक विकास प्राप्त कर सकता है।

सामाजिक–आर्थिक विकास की अनुकूल प्रवृत्ति बदले में सत्यनिष्ठा की संस्कृति को मजबूत करने के लिए एक ठोस आधार प्रदान करती है। आर्थिक समृद्धि ने सरकार और सामाजिक संगठनों के संसाधनों में वृद्धि की है, जिससे भ्रष्टाचार विरोधी कार्यों में अधिक समर्थन और निवेश की अनुमति मिलती है, कानून के शासन और पर्यवेक्षण तंत्र में सुधार होता है, और जनता की शिक्षा का स्तर और कानूनी जागरूकता बढ़ती है।

आर्थिक विकास के कारण भौतिक जीवन स्तर और समाज की समग्र गुणवत्ता में सुधार के साथ, नागरिकों की सत्यनिष्ठा और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना भी बढ़ी है, जिससे एक अच्छा माहौल बना है जिसमें सत्यनिष्ठा की संस्कृति लोगों के दिलों में और अधिक गहराई से जड़ें जमा रही है। हालाँकि, सत्यनिष्ठा की संस्कृति और सामाजिक और आर्थिक विकास के बीच का रिश्ता हमेशा सहज और निर्बाध नहीं होता है।

तेजी से आर्थिक विकास के साथ–साथ लाभ–संचालित और भौतिकवाद का प्रचलन भी हो सकता है, जो कुछ लोगों को अवैध हितों को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित कर सकता है और भ्रष्ट व्यवहार के प्रजनन और प्रसार को बढ़ावा दे सकता है। इसलिए, आर्थिक विकास को बढ़ावा देते समय, सत्यनिष्ठा की संस्कृति के निर्माण को बहुत महत्व देना, सत्यनिष्ठा की शिक्षा और संस्थागत निर्माण को मजबूत करना और यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि आर्थिक विकास के साथ–साथ सत्यनिष्ठा की संस्कृति को बढ़ावा दिया जाए।

सत्यनिष्ठा की संस्कृति और सामाजिक और आर्थिक विकास के बीच एक महत्वपूर्ण सहक्रियात्मक प्रभाव है, और दोनों समाज की समग्र प्रगति को बढ़ावा देने के लिए एक दूसरे के पूरक हैं। सत्यनिष्ठा की संस्कृति शासन और बाजार के माहौल को अनुकूलित करके अर्थव्यवस्था के स्वस्थ विकास को बढ़ावा देती है, जबकि आर्थिक विकास सत्यनिष्ठा की संस्कृति के प्रसार और समेकन के लिए आवश्यक भौतिक आधार और सामाजिक स्थितियाँ प्रदान करता है। सत्यनिष्ठा की संस्कृति और सामाजिक–आर्थिक विकास के बीच सौम्य अंतःक्रिया को साकार करने के लिए, भ्रष्टाचार से निपटने, संस्थागत निर्माण को मजबूत करने, सत्यनिष्ठा की शिक्षा को गहरा करने और सत्यनिष्ठा के लिए सम्मान का सामाजिक माहौल बनाने के लिए कानून के शासन का पालन करना आवश्यक है।

समाज के संयुक्त प्रयासों के माध्यम से, राष्ट्र की समृद्धि प्राप्त करने के लिए सत्यनिष्ठा की संस्कृति और सामाजिक–आर्थिक विकास के सहक्रियात्मक प्रभाव को पूर्ण रूप से लागू किया जा सकता है।

निष्कर्ष

"लंबे समय में, भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई केवल उसी हद तक सफल होगी, जिस हद तक एक सामाजिक अनुकूल माहौल बनाया जाएगा। जब ऐसा माहौल बनता है, और भ्रष्टाचार जनता और लोक सेवकों के मन में घृणित हो जाता है और सामाजिक नियंत्रण अधिक प्रभावी हो जाता है, तो अन्य प्रशासनिक, अनुशासनात्मक और दंडात्मक उपाय महत्वहीन हो सकते हैं और उन्हें शिथिल और न्यूनतम किया जा सकता है।

(संथानम समिति रिपोर्ट–1964 से अंश)

भ्रष्टाचार से निपटने का समाधान न केवल कानून/नियम बनाने में है, बल्कि समाज के सभी हितधारकों के बीच नैतिक मूल्यों को विकसित करने में भी है। उपरोक्त उद्देश्य को प्राप्त करने का एक साधन आउटरीच गतिविधियों के माध्यम से है जो भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई में देश के सभी नागरिकों की भागीदारी को प्रोत्साहित करती है। सतर्कता जागरूकता सप्ताह (वीएडब्ल्यू) गतिविधियाँ जागरूकता पैदा करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम हैं।

जैसा कि हमारे राष्ट्रपिता ने कहा है,

"आपको वह परिवर्तन स्वयं बनना होगा जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं"

"अपने मूल्यों के प्रति सच्चे रहें और सत्यनिष्ठा से काम करें"

संदर्भ

1. सत्यनिष्ठा की संस्कृति और सामाजिक–आर्थिक विकास सहभागिता और तालमेल, आर्थिक विकास और प्रबंधन नवाचार पर 6वीं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी (ईडीएमआई 2024)
2. केन्द्रीय सतर्कता आयोग, वार्षिक रिपोर्ट।
3. प्रेस सूचना ब्यूरो।
4. एसडीजी एक्सेलेरेटर के रूप में शासनः देश के अनुभव और उपकरण, ओईसीडी प्रकाशन, पेरिस।

सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि

– नीतू,
उप प्रबंधक
तृतीय पुरस्कार, निबंध प्रतियोगिता

"किसी राष्ट्र की ताकत उसके घर की सत्यनिष्ठा से उत्पन्न होती है।" – कन्फ्यूशियस

घरों के भीतर विकसित की गई सत्यनिष्ठा मजबूत, नैतिक व्यक्तियों के विकास में योगदान देती है जो समाज के निर्माण में योगदान देते हैं। एक समाज जो पारिवारिक स्तर पर सत्यनिष्ठा को प्राथमिकता देता है वह भ्रष्टाचार और अनैतिक व्यवहार के मामलों को कम कर सकता है।

जो व्यक्ति सत्यनिष्ठा को महत्व देते हैं, उनके नागरिक गतिविधियों में संलग्न होने और न्याय की वकालत करने की अधिक संभावना होती है। यह सक्रिय भागीदारी खुलेपन, संवाद, आम सहमति और सार्वजनिक हित के आधार पर निष्पक्ष निर्णय लेने की लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को बढ़ाती है। यह कानून के शासन और मानवाधिकारों के सम्मान पर आधारित बहुलवादी लोकतंत्र के प्रति प्रतिबद्धता जैसे अन्य मौलिक मूल्यों को भी मजबूत करता है।

भारत की माननीय राष्ट्रपति ने राष्ट्र के नाम अपने संदेश में इस बात पर भी जोर दिया कि 'भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई इस महान राष्ट्र के सभी नागरिकों का सामूहिक कर्तव्य और जिम्मेदारी है। इसलिए, भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए नागरिकों की भागीदारी बेहद महत्वपूर्ण और आवश्यक है।

संकट के समय में, सत्यनिष्ठा पर आधारित समाज अधिक प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया दे सकता है। एक–दूसरे और संस्थाओं पर भरोसा सामूहिक कार्रवाई और समर्थन को बढ़ावा देता है, जिससे समाज चुनौतियों का मिलकर सामना करने में सक्षम होता है।

"लंबे समय में, भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई केवल उसी हद तक सफल होगी, जब तक एक अनुकूल सामाजिक माहौल तैयार किया जाएगा। जब ऐसा माहौल बनता है, और जनता और लोक सेवकों के मन में भ्रष्टाचार घृणित हो जाता है और सामाजिक नियंत्रण प्रभावी हो जाता है, तो अन्य प्रशासनिक, अनुशासनात्मक और दंडात्मक उपाय महत्वहीन हो सकते हैं और उन्हें शिथिल करके न्यूनतम किया जा सकता है। (संथानम समिति की रिपोर्ट)

ईमानदारी कोई अलग गुण नहीं हैय यह विश्वास, जवाबदेही और निष्पक्षता जैसे अन्य महत्वपूर्ण मूल्यों के लिए आधारशिला के रूप में कार्य करता है। ब्रायन ट्रेसी के शब्दों में, "ईमानदारी वह आधार है जिस पर अन्य सभी मूल्य निर्मित होते हैं।"

सत्यनिष्ठा व्यक्तियों के साथ न्यायसंगत व्यवहार को प्रोत्साहित करती है, यह सुनिश्चित करती है कि सभी को समान मानकों पर रखा जाए। यह निष्पक्षता सामाजिक एकजुटता और न्याय के लिए बेहद जरूरी है।

सत्यनिष्ठा की संस्कृति व्यक्तियों और संगठनों को अपने कार्यों की जिम्मेदारी लेने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह जवाबदेही सामुदायिक संबंधों को मजबूत बनाती है और संस्थागत प्रभावशीलता को बढ़ाती है।

जब समाज में अखंडता अंतर्निहित होती है, तो यह विकास और तरक्की के लिए अनुकूल एक स्थिर वातावरण तैयार करती है। कुछ क्षेत्र जहां सत्यनिष्ठा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैः

शासनः संस्थानों की वैधता के लिए सत्यनिष्ठा आवश्यक है। ईमानदार शासन जनता में विश्वास पैदा करता है, नागरिक जुड़ाव को प्रोत्साहित

करता है और भ्रष्टाचार को कम करता है। सार्वजनिक जीवन के सात सिद्धांतों में निस्वार्थता, सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता, जवाबदेही, खुलापन, ईमानदारी और नेतृत्व शामिल हैं (सार्वजनिक जीवन में मानकों पर समिति की पहली रिपोर्ट, लंदन 1995)।

व्यवसाय: सत्यनिष्ठा को प्राथमिकता देने वाली कंपनियां ग्राहकों और हितधारकों के साथ मजबूत संबंधों को बढ़ावा देने, स्थायी लाभप्रदता सुनिश्चित करने में दीर्घकालिक रूप से सफल होने की अधिक संभावना रखती हैं।

समुदाय: सत्यनिष्ठा अपनेपन और आपसी सहयोग की भावना को पोषित करती है। सत्यनिष्ठा पर आधारित समुदाय अधिक लचीले होते हैं, और सामूहिक रूप से और प्रभावी ढंग से चुनौतियों का सामना करते हैं।

अंततः सत्यनिष्ठा एक ऐसे माहौल को पोषित करके राष्ट्र की समृद्धि में योगदान देती है जहाँ नवाचार और सहयोग पनप सकता है। अर्थव्यवस्थाएँ तब समृद्ध होती हैं जब व्यवसाय नैतिक रूप से संचालित होते हैं, और नागरिक एक–दूसरे और अपनी सरकारों के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ते हैं।

जब व्यवसाय पारदर्शी और नैतिक आचरण बनाए रखते हैं, तो वे निवेश आकर्षित करते हैं और नवाचार को बढ़ावा देते हैं। निवेशक ऐसे वातावरण में परियोजनाओं का समर्थन करने की अधिक संभावना रखते हैं जहाँ भ्रष्टाचार न्यूनतम है और विनियमन निष्पक्ष रूप से लागू किए जाते हैं। जो देश सत्यनिष्ठा को प्राथमिकता देते हैं वे एक समान अवसर स्थापित करते हैं जो प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करता है और आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करता है।

इसके अलावा, व्यावसायिक प्रथाओं में सत्यनिष्ठा से उपभोक्ता का विश्वास बढ़ता है। जब उपभोक्ताओं को भरोसा होता है कि कंपनियां अपने उत्पादों और सेवाओं के बारे में ईमानदार हैं, तो वे लेनदेन में शामिल होने, बिक्री बढ़ाने और ग्राहक वफादारी को बढ़ावा देने के लिए अधिक इच्छुक होते हैं। इसका परिणाम व्यवसायों के लिए दीर्घकालिक लाभप्रदता में होता है। परिणामस्वरूप, एक मजबूत अर्थव्यवस्था उस माहौल में समृद्ध होती है जहाँ सत्यनिष्ठा कायम रहती है।

दूसरी ओर, सत्यनिष्ठा की कमी आर्थिक विकास को कमजोर करती है और व्यावसायिक संचालन को बाधित करती है। ओईसीडी देशों के साक्ष्य से पता चलता है कि उच्च स्तर का भ्रष्टाचार प्रतिस्पर्धा के निम्न स्तर से जुड़ा हुआ है (ओईसीडी, 2016) विशेष रूप से छोटी या कम प्रभावशाली कंपनियों को प्रभावित करता है जो उच्च प्रवेश बाधाओं या बाजार पहुंच की कमी का सामना कर रहे हैं (एसडीजी 8% सभ्य कार्य और आर्थिक विकास)

भ्रष्टाचार बाजार में अक्षमता भी पैदा करता है क्योंकि रिश्वत देने की आवश्यकता बाजार में प्रवेश में बाधा है (विश्व बैंक)। संयुक्त राष्ट्र मादक पदार्थ नियंत्रण कार्यालय (यूएनओडीसी) के अनुसार, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, चोरी और कर चोरी तथा अन्य अवैध वित्तीय प्रवाह से विकासशील देशों को प्रति वर्ष 1.26 ट्रिलियन डॉलर का नुकसान होता है।

सत्यनिष्ठा स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, पानी और स्वच्छता जैसी आवश्यक सामाजिक सेवाओं तक समान पहुँच को भी बढ़ाती है। नीति डिजाइन से लेकर कार्यान्वयन और मूल्यांकन तक सेवा वितरण के हर चरण में भ्रष्टाचार घुसपैठ कर सकता है। उदाहरण के लिए, स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में, नागरिकों से रोगियों की भारी आमद वाले विश्वसनीय अस्पतालों में भर्ती होने के लिए रिश्वत देने के लिए कहा जा सकता है।

इसके अलावा, सत्यनिष्ठा सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब व्यक्तियों को लगता है कि उनके साथ उचित व्यवहार किया जा रहा है, तो वे एक–दूसरे के साथ सकारात्मक रूप से जुड़ने की अधिक संभावना रखते हैं, जिससे सामुदायिक संबंध और नागरिक भागीदारी को बढ़ावा मिलता है। सामंजस्यपूर्ण समाज के लिए एक सुसंगत सामाजिक ताना–बाना आवश्यक है, जो कथित अन्याय से उत्पन्न होने वाले तनाव को कम करता है।

जब नागरिक अपने संस्थानों पर भरोसा करते हैं और महसूस करते हैं कि उनकी आवाज सुनी जाती है, तो वे अवैध गतिविधियों का सहारा लेने के बजाय सामुदायिक कल्याण में योगदान देने की अधिक संभावना रखते हैं। सत्यनिष्ठा की संस्कृति जिम्मेदार नागरिकता को प्रोत्साहित करती है और समाज की चुनौतियों में सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देती है।

इसके विपरीत, भ्रष्टाचार और पारदर्शिता की कमी से जूझ रहे राष्ट्रों में अक्सर राजनीतिक अस्थिरता और सामाजिक अशांति का अनुभव होता है। इसलिए, शासन संरचनाओं के भीतर सत्यनिष्ठा को बढ़ावा देना एक लचीला और उत्तरदायी राजनीतिक वातावरण बनाने के लिए महत्वपूर्ण है।

सत्यनिष्ठा की संस्कृति को बढ़ावा देने की शुरुआत शिक्षा से होती है। स्कूलों और संस्थानों को नैतिक व्यवहार, महत्वपूर्ण सोच और जवाबदेही पर जोर देना चाहिए। भावी पीढ़ियों में इन मूल्यों को स्थापित करके, समाज सत्यनिष्ठा के लिए एक मजबूत आधार बना सकता है जो व्यक्तिगत कार्यों और सांस्कृतिक मानदंडों में व्याप्त है।

साथ ही, कर्मचारियों के बीच विश्वास, सहयोग और नैतिक व्यवहार को बढ़ावा देने के लिए कार्यस्थल में सत्यनिष्ठा की संस्कृति विकसित करना आवश्यक है। यह अंततः दीर्घकालिक सफलता और समृद्धि की ओर ले जाता है। संगठनों को भ्रष्टाचार के जोखिमों का आकलन करना चाहिए और प्रौद्योगिकी पर जोर देते हुए जोखिम प्रबंधन रणनीतियों को लागू करना चाहिए, जो नागरिकों को प्रबंधन के साथ बातचीत करने में भी सुविधा प्रदान करता है।

साहित्य, मीडिया और समुदाय के नेताओं के माध्यम से अखंडता का जश्न मनाने वाले सांस्कृतिक आख्यान भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब समाज ईमानदारी, जिम्मेदारी और नैतिक आचरण की कहानियों को प्रोत्साहित करता है, तो वे दिन–प्रतिदिन के जीवन में इन मूल्यों के महत्व को सुदृढ़ करते हैं। यह सांस्कृतिक सुदृढीकरण सत्यनिष्ठा के प्रति सामूहिक प्रतिबद्धता, विभिन्न स्तरों पर व्यवहार और अपेक्षाओं को आकार देने का कारण बन सकता है।

निष्कर्ष: सत्यनिष्ठा की संस्कृति राष्ट्र की समृद्धि के लिए अपरिहार्य है। आर्थिक विकास को बढ़ावा देने, सामाजिक स्थिरता को प्रोत्साहित करने और उत्तरदायी शासन सुनिश्चित करने के द्वारा, सत्यनिष्ठा एक संपन्न समाज के लिए आधारशिला के रूप में कार्य करती है। चूंकि राष्ट्र जटिल वैश्विक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, इसलिए इन मुद्दों को हल करने और एक स्थायी भविष्य के निर्माण में सत्यनिष्ठा को एक मुख्य मूल्य के रूप में अपनाना आवश्यक होगा। इसके अलावा, सत्यनिष्ठा की खोज न केवल व्यक्तिगत चरित्र को बढ़ाती है बल्कि उस नींव को भी मजबूत करती है जिस पर समृद्ध समाज का निर्माण होता है।

देश हितधारकों की भागीदारी के माध्यम से नागरिकों को सार्वजनिक सत्यनिष्ठा के लिए उनकी भूमिका और जिम्मेदारियों को समझने और बनाए रखने में संलग्न कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, जागरूकता बढ़ाने वाले अभियानों के माध्यम से जनता को संबोधित करके प्रयास किए जा सकते हैं (सतर्कता जागरूकता सप्ताह और सत्यनिष्ठा शपथ सहित केंद्रीय सतर्कता आयोग की पहल सही दिशा में कदम हैं। साथ ही, भ्रष्टाचार पर जागरूकता पैदा करने के लिए बैठकें, शिकायत निवारण पर नागरिकों को शिक्षित करना और ग्राम पंचायत स्तर पर जागरूकता ग्राम सभाओं के हिस्से के रूप में प्रतियोगिताएं/रात्रि चौपाल/सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करना आयोग द्वारा किया जाता है), या निजी क्षेत्र को जिम्मेदार व्यावसायिक आचरण को बढ़ावा देने और प्रोत्साहित करने के माध्यम से। इसे पूरा करने के लिए, सरकारों, व्यवसायों, शैक्षणिक संस्थानों और संगठनों के लिए मिलकर काम करना महत्वपूर्ण है। सहयोग करके, एक ऐसा वातावरण बनाया जा सकता है जहाँ सत्यनिष्ठा को महत्व दिया जाता है और सक्रिय रूप से इसका अभ्यास किया जाता है, जिससे राष्ट्र के उज्जवल भविष्य और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है।

सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि

– सुभाष
सहायक महाप्रबंधक
सांत्वना पुरस्कार, निबंध प्रतियोगिता

"ना कहने का साहस रखें। सच्चाई का सामना करने का साहस रखें। सही काम करें क्योंकि वह सही है। ये आपके जीवन को ईमानदारी से जीने की जादुई कुंजियाँ हैं।"

किसी भी राष्ट्र में शांति, प्रगति और समृद्धि स्थापित करने के लिए सांस्कृतिक मूल्य आवश्यक हैं। किसी राष्ट्र की संस्कृति का जटिल ताना–बाना कला, अर्थशास्त्र, इतिहास, धर्म, परंपराओं, सामाजिक व्यवहार, भाषा, कानून, रीति–रिवाज, जलवायु और भूगोल सहित विभिन्न तत्वों से बुना जाता है। "ईमानदारी और जवाबदेही की संस्कृति बनाने से न केवल प्रभावशीलता में सुधार होता है, बल्कि यह काम करने के लिए एक सम्मानजनक, आनंददायक और जीवनदायी माहौल भी पैदा करता है।"

समृद्धि सिर्फ धन–संपत्ति से कहीं बढ़कर हैय यह तब है जब सभी लोगों को समृद्ध होने का अवसर और स्वतंत्रता मिले। समृद्धि एक समावेशी समाज द्वारा समर्थित है, जिसमें एक मजबूत सामाजिक अनुबंध है जो हर व्यक्ति की मौलिक स्वतंत्रता और सुरक्षा की रक्षा करता है। यह एक खुली अर्थव्यवस्था द्वारा संचालित है जो गरीबी से बाहर निकलने के लिए स्थायी रास्ते बनाने के लिए विचारों और प्रतिभा का उपयोग करती है। और यह सशक्त लोगों द्वारा निर्मित है, जो योगदान करते हैं और एक ऐसे समाज के निर्माण में अपनी भूमिका निभाते हैं जो कल्याण को बढ़ावा देता है।

मनुष्य पृथ्वी की सतह पर खुद को अभी और अपनी संतानों के माध्यम से हमेशा के लिए जीवित रखने की वृत्ति और इच्छा के साथ पाता है। प्रकृति ने इसे संभव बनाने के लिए साधन प्रदान किए हैं, पृथ्वी के संसाधनों में और मानव जाति की उन संसाधनों को खोजने, उनका उपयोग करने, उन्हें बढ़ाने और अनुकूलित करने की क्षमता में। लेकिन मनुष्य उन संसाधनों के संबंध में आँख मूंदकर लापरवाह हो सकता है और रहा है। जबकि उसकी क्षमता और उसकी सरलता, मानवीय रूप से, खुद को और अपने भौतिक पर्यावरण को एक दूसरे के अनुकूल बनाने के मामले में असीमित हो सकती है, उसके भौतिक संसाधन निश्चित रूप से असीमित नहीं हैं; और इसलिए, उसके शारीरिक कल्याण की केंद्रीय समस्या दुर्लभ संसाधनों का सबसे कुशल उपयोग करने की आवश्यकता बन जाती है।

सच्ची समृद्धि तब होती है जब सभी लोगों को अपनी अद्वितीय क्षमता को पूरा करने और अपने समुदायों और राष्ट्रों को मजबूत बनाने में अपनी भूमिका निभाने का अवसर मिलता है। समृद्धि एक समावेशी समाज पर आधारित होती है, जिसमें एक मजबूत सामाजिक अनुबंध होता है जो प्रत्येक व्यक्ति की मौलिक स्वतंत्रता और सुरक्षा की रक्षा करता है।

एक समृद्ध समाज में, लोग हिंसा, उत्पीड़न और अपराध के खतरे से मुक्त होकर शांति से रहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की अंतर्निहित गरिमा का सम्मान किया जाता है, और बोलने, पूजा करने और एकत्र होने की स्वतंत्रता की रक्षा की जाती है। शासकीय संस्थाएँ ईमानदारी के साथ कार्य करती हैं, नागरिकों के प्रति जवाबदेह होती हैं और कानून के शासन के अधीन होती हैं। स्थिर परिवार और सहायक समुदाय उन मूल्यों को स्थापित करते हैं जो संस्कृति को आकार देते हैं और समाज के फलने–फूलने के लिए आवश्यक विश्वास के बंधन का निर्माण करते हैं। समृद्धि एक खुली अर्थव्यवस्था से प्रेरित होती है जो गरीबी से बाहर निकलने के लिए स्थायी रास्ते बनाने के लिए विचारों और प्रतिभा का उपयोग करती है।

सांस्कृतिक सत्यनिष्ठा और राष्ट्र की समृद्धि

सांस्कृतिक सत्यनिष्ठा संसाधनों के निष्पक्ष और कुशल उपयोग को सुनिश्चित करके, प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करके, निवेश को आकर्षित करके और नवाचार को बढ़ावा देकर समावेशी विकास और सतत विकास को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सरकारी अधिकारियों की सांस्कृतिक सत्यनिष्ठा को बनाए रखना और जिम्मेदार व्यावसायिक प्रथाओं को बढ़ावा देना निष्पक्ष बाजार स्थितियों को स्थापित करने के लिए आवश्यक है। इससे ऐसा माहौल बनता है जहाँ व्यवसाय समान शर्तों पर पनप सकते हैं, नवाचार कर सकते हैं और प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं। नीतियों के लिए वास्तव में सार्वजनिक हित की सेवा करना, निर्णय लेने वाले सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन, ग्राहक इंटरफेस और सेवा वितरण जैसे क्षेत्रों में जवाबदेही और सत्यनिष्ठा महत्वपूर्ण है। ये कारक अधिक समान और समृद्ध समाज बनाने में सहायता करते हैं।

सांस्कृतिक सत्यनिष्ठा समृद्धि के शासन को बढ़ावा देती है, जिसका उद्देश्य आम भलाई के लिए सामूहिक कार्यों को पूरा करना है, इस प्रक्रिया के लिए सार्वजनिक संस्थानों में विश्वास आवश्यक है। यह विश्वास महत्वपूर्ण है कि ये कार्य निष्पक्षतापूर्वक और प्रभावी ढंग से निष्पादित किये जायेंगे।

सांस्कृतिक सत्यनिष्ठा की कमी भ्रष्टाचार है जो सत्यनिष्ठा और नैतिक लक्ष्य के बिल्कुल विपरीत है; यह संस्थाओं को विकृत करता है, संसाधनों का दुरुपयोग करता है, जनता के विश्वास को खत्म करता है और मानव प्रगति में बाधा डालता है। ये सभी राष्ट्र की समृद्धि के लिए सत्यनिष्ठा की संस्कृति में बाधा हैं। इन्हें नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि यह महत्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक चुनौतियाँ लेकर आता है। आज, कोई भी शासन रणनीति इस मुद्दे को नजरअंदाज नहीं कर सकती।

जीवन और व्यवसाय में सत्यनिष्ठा और नैतिकता का महत्व न केवल तात्कालिक वातावरण–परिवारों, संगठनों, समुदायों–बल्कि बड़े पैमाने पर समाज और यहां तक कि दुनिया को भी प्रभावित करता है। ये विकल्प उन्हें चुनने वाले व्यक्तियों को भी गहराई से प्रभावित करते हैं।

व्यवहारिक नैतिकता में शोध से पता चलता है कि जब किसी व्यक्ति की सांस्कृतिक सत्यनिष्ठा खत्म हो जाती है तो इससे दूसरों को नुकसान पहुंचता है, इससे मानव स्वभाव के प्रति उनका सम्मान कम होता है। समय के साथ, यह आत्म–सम्मान और सत्यनिष्ठा की भावना को खत्म कर देता है।

एक बार जब कोई व्यक्ति दूसरे को सम्मान देने से इनकार कर देता है, तो वह खुद के लिए सम्मान खोना शुरू कर सकता है, जिससे आगे अनैतिक व्यवहार की संभावना बढ़ जाती है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि एक अनैतिक कार्य के बाद, किसी व्यक्ति का नैतिक लचीलापन कमजोर हो जाता है और गलत कार्यों के प्रति उनका प्रतिरोध कम हो जाता है, जब तक कि कोई आंतरिक या बाहरी हस्तक्षेप इस पैटर्न को बाधित नहीं करता है (वेल्श, ऑर्डोनेज, स्नाइडर, और क्रिश्चियन, 2015)।

हालाँकि व्यावसायिक सत्यनिष्ठा और नैतिकता के लाभ स्पष्ट हैं, लेकिन ऐतिहासिक रूप से उन्हें औपचारिक प्रबंधन प्रक्रियाओं से बाहर रखा गया है। हालाँकि, हाल के दशकों में, कंपनियों को नेतृत्व और कर्मचारियों दोनों से मजबूत सांस्कृतिक सत्यनिष्ठा और नैतिकता कार्यक्रमों को लागू करने के लिए बढ़ते दबाव का सामना करना पड़ा है। सख्त नियम अब न केवल अनिवार्य हैं बल्कि व्यवसायों को कानूनों और सांस्कृतिक और नैतिक मानकों के साथ अपने अनुपालन को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित भी करते हैं।

राष्ट्रीय समृद्धि की ओर अग्रसर होने के लिए सांस्कृतिक सत्यनिष्ठा और नैतिकता को बनाए रखने के विभिन्न दृष्टिकोण हैं, जो निम्नानुसार हैं:

- अधिकारियों को व्यक्तिगत प्रतिबद्धता, विश्वसनीयता प्रदर्शित करनी होगी, तथा उन मूल्यों के अनुसार कार्य करने के लिए तैयार रहना होगा जिन्हें वे बढ़ावा देते हैं ("शीर्ष से स्वर")।
- बुनियादी मूल्य और प्रतिबद्धताएँ समझदार, स्पष्ट रूप से परिभाषित और प्रभावी ढंग से संप्रेषित की जाती हैं, आमतौर पर लिखित आचार संहिता या नैतिकता नीति के माध्यम से।
- संसाधनों का कुशलतापूर्वक आवंटन सुनिश्चित करने के लिए संपूर्ण जोखिम मूल्यांकन हेतु आंतरिक संचार रणनीतियाँ।
- इन मूल्यों को दैनिक कार्यों में सहजता से शामिल किया जाना चाहिए, तथा जटिल या अस्पष्ट परिस्थितियों में भी कर्मचारियों

को सहायता प्रदान करने के लिए व्यावहारिक संसाधन और प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।

- व्हिसल–ब्लोइंग चैनलों जैसी चिंताओं की रिपोर्टिंग के लिए एक मजबूत आंतरिक नियंत्रण प्रणाली।
- सत्यनिष्ठा और नैतिकता कार्यक्रम को निरंतर सुधार की एक सतत प्रक्रिया के रूप में माना जाएगा, जिसमें उपायों की नियमित निगरानी और समीक्षा की जाएगी।
- 2015 में, संयुक्त राष्ट्र ने सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) पेश किए, जो 17 उद्देश्यों का एक समूह है जिसका उद्देश्य गरीबी को मिटाना, पर्यावरण की रक्षा करना और सभी के लिए समृद्धि को बढ़ावा देना है। समाज में योगदान करने और स्थिरता को बढ़ावा देने में संस्कृतियों की जिम्मेदारी और निहित स्वार्थ दोनों हैं।
- संस्कृति कई तरह से सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। उदाहरण के लिए, संगठन स्वच्छ, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को अपना सकता है, उचित वेतन का भुगतान कर सकता है, कार्यस्थल पर स्वास्थ्य और सुरक्षा सुनिश्चित कर सकता है, स्थानीय आपूर्तिकर्ताओं से सामग्री प्राप्त कर सकता है, जिम्मेदारी से करों का भुगतान कर सकता है और शैक्षिक पहल का समर्थन कर सकता है।

सांस्कृतिक सत्यनिष्ठा को बढ़ावा देने के साधन:

- **एकजुटता** में दूसरों की भलाई के लिए सक्रिय चिंता प्रदर्शित करना शामिल है। व्यवसाय में, इसका अर्थ समाज के सामान्य हित में योगदान देना है, जैसे ऐसे उत्पाद विकसित करना जो वास्तव में ग्राहकों को लाभान्वित करते हैं, न कि उनके मूल्य की परवाह किए बिना केवल लाभ के लिए सामान बेचना।
- **दक्षता** का तात्पर्य जिम्मेदार व्यवसाय चलाने के लिए संसाधनों के सर्वोत्तम उपयोग से है। इसे समय और संसाधनों की बर्बादी को कम करके या कर्मचारियों के लिए उचित ऑनबोर्डिंग, प्रशिक्षण और विकास सुनिश्चित करके प्रदर्शित किया जा सकता है ताकि वे प्रभावी ढंग से प्रदर्शन कर सकें।
- **तर्कसंगतता** के लिए सनक, पूर्वाग्रह या केवल भावनाओं के आधार पर काम करने के बजाय, सोच–समझकर, तर्कपूर्ण विचारों के आधार पर निर्णय लेने की आवश्यकता होती है। जबकि भावनाओं और संवेदनाओं को स्वीकार किया जाता है, उन्हें वस्तुनिष्ठ निर्णय लेने के साथ संतुलित किया जाना चाहिए।
- **निष्पक्षता** का मतलब है दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना जैसा आप चाहते हैं कि आपके साथ किया जाए। इस सिद्धांत में निर्णय लेने, पदोन्नति, पुरस्कार और नियुक्ति में पक्षपात से बचना, साथ ही ग्राहकों के साथ ईमानदार व्यापारिक व्यवहार सुनिश्चित करना, गलत बयानी या धोखे से बचना शामिल है।
- **जानबूझकर दूसरों को नुकसान पहुंचाने से बचने** का मतलब है व्यावसायिक कार्यों के संभावित परिणामों के बारे में पूरी तरह से जागरूक होना। यदि कोई कार्य स्पष्ट रूप से हानिकारक है, जैसे एक्सपायर हो चुकी दवाएँ बेचना, तो उसे आगे नहीं बढ़ाया जाना चाहिए। यदि नुकसान किसी लाभकारी कार्य का अनपेक्षित दुष्प्रभाव है, तो व्यवसाय आगे बढ़ सकता है यदि सकारात्मक परिणाम नुकसान से अधिक है, कोई उचित विकल्प मौजूद नहीं है, और नुकसान को कम करने के प्रयास किए जाते हैं। इसे दोहरे प्रभाव के सिद्धांत के रूप में जाना जाता है।
- **भूमिका–जिम्मेदारी** यह स्वीकार करती है कि व्यवसायों के अलग–अलग हितधारकों के प्रति अलग–अलग दायित्व होते हैं। पिछले सिद्धांतों का पालन करने के बाद, किसी कंपनी को सामाजिक सुधार के लिए लाभ आवंटित करने से पहले शेयरधारकों को उचित रिटर्न सुनिश्चित करना चाहिए।

कॉर्पोरेट कदाचार शायद ही कभी किसी एक व्यक्ति के चरित्र दोषों का परिणाम होता है। अधिकतर, अनैतिक व्यावसायिक प्रथाओं में दूसरों का निहित, यदि स्पष्ट नहीं, सहयोग शामिल होता है और वे मूल्यों, दृष्टिकोणों, विश्वासों, भाषा और व्यवहार को दर्शाते हैं जो किसी संगठन की संस्कृति को आकार देते हैं। इसलिए, नैतिकता एक संगठनात्मक मुद्दा जितना ही व्यक्तिगत है। जो प्रबंधक मजबूत नेतृत्व प्रदान करने या नैतिक व्यवहार को बढ़ावा देने वाली प्रणालियों को लागू करने में विफल रहते हैं, वे उन लोगों के साथ जिम्मेदारी साझा करते हैं जो कॉर्पोरेट गलत कामों को डिजाइन करते हैं, उन्हें अंजाम देते हैं और जानबूझकर उनसे लाभ उठाते हैं।

सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि

– आरजू यादव
सहायक प्रबंधक
सांत्वना पुरस्कार, निबंध प्रतियोगिता

"स्वयं को खोजने का सबसे अच्छा तरीका, स्वयं को दूसरों की सेवा में खो देना है।" महात्मा गांधी का यह उद्धरण ईमानदारी और निस्वार्थता के महत्व पर जोर देता है। किसी भी राष्ट्र की सफलता के लिए अखंडता की संस्कृति आवश्यक है। यह विश्वास का निर्माण करती है, टीमवर्क को प्रोत्साहित करती है, और दीर्घकालिक विकास का समर्थन करती है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में सत्यनिष्ठा को अपनाने से महत्वपूर्ण प्रगति और विकास हो सकता है।

सत्यनिष्ठा एक मजबूत समाज की नींव का कार्य करती है। इसका अर्थ है ईमानदार, स्पष्ट और जिम्मेदार होना।

जब व्यक्ति इन मूल्यों का अभ्यास करते हैं, तो वे अपने समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। यह सिद्धांत सरकार, व्यापार और शिक्षा सहित सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है। जब नागरिक अपने नेताओं पर भरोसा करते हैं तो उनके विकास को बढ़ावा देने वाली नीतियों का समर्थन करने की अधिक संभावना होती है।

भारत में हाल की घटनाएं शासन में सत्यनिष्ठा की आवश्यकता पर प्रकाश डालती हैं। "डिजिटल इंडिया" जैसे कार्यक्रमों का उद्देश्य पारदर्शिता बढ़ाकर भ्रष्टाचार को कम करना है। सरकारी सेवाओं तक ऑनलाइन पहुँच प्रदान करके, ये पहल रिश्वतखोरी व धोखाधड़ी को और अधिक कठिन बना देती है। इस तरह के प्रयास यह दर्शाते हैं कि किस प्रकार सत्यनिष्ठा शासन को मजबूत कर सकती है और जनता का विश्वास प्राप्त कर सकती है। जब लोग अपनी सरकार पर भरोसा करते हैं, तो उनके नागरिक गतिविधियों में शामिल होने और राष्ट्रीय विकास का समर्थन करने की संभावना अधिक होती है।

भारत में कई ऐतिहासिक शख्सियतें हैं जो सत्यनिष्ठा का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। महात्मा गांधी इसका प्रमुख उदाहरण हैं। भारत की आजादी की लड़ाई के दौरान सत्यनिष्ठा और अहिंसा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता महत्वपूर्ण थी। गांधी जी की शिक्षाएं इस बात पर जोर देती हैं कि एक न्यायपूर्ण समाज के लिए सत्यनिष्ठा आवश्यक है। उनकी विरासत आज भी कई लोगों को प्रेरित करती है तथा हमें याद दिलाती है कि नेताओं को उच्च नैतिक मानकों का पालन करना चाहिए।

व्यवसाय जगत में भी सत्यनिष्ठा उतनी ही महत्वपूर्ण है। जो कंपनियाँ सत्यनिष्ठा और पारदर्शिता को प्राथमिकता देती हैं उनके सफल होने की संभावना भी अधिक होती है। वे ग्राहकों का अधिक विश्वास अर्जित करते हैं और कर्मचारियों के साथ स्वस्थ संबंध बनाए रखते हैं। रतन टाटा जैसे भारतीय लीडर बताते हैं कि कैसे सत्यनिष्ठा दीर्घकालिक सफलता की ओर ले जा सकती है। नैतिक प्रथाओं पर टाटा के फोकस ने कंपनी को अत्यधिक प्रतिष्ठा अर्जित करवाई है, जो निरंतर विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

इसके अतिरिक्त, सत्यनिष्ठा नवाचार को बढ़ावा देती है। जब व्यक्ति सम्मानित और सुरक्षित महसूस करते हैं, तो वे अपने विचार साझा करने के लिए अधिक इच्छुक होते हैं। खुलेपन की यह संस्कृति रचनात्मकता और प्रगति की ओर ले जाती है। भारत के प्रौद्योगिकी क्षेत्र में, इंफोसिस जैसी कंपनियां सफल हैं क्योंकि वे नैतिक मानकों को बनाए रखती हैं तथा ऐसा वातावरण निर्मित करती हैं जहां कर्मचारी अपने विचार व्यक्त करने में सहज महसूस करते हैं। ऐसी कम्पनियां प्रायः अधिक अनुकूलनशील होती हैं, क्योंकि वे ऐसी संस्कृति को प्रोत्साहित करती हैं जहां नये विचार पनप सकते हैं।

सत्यनिष्ठा की संस्कृति को बढ़ावा देने में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विद्यालयों को सत्यनिष्ठा और जवाबदेही के महत्व पर जोर देना चाहिए। छोटी उम्र से ही इन मूल्यों को सिखाकर, हम भविष्य के ऐसे व्यक्तित्व को आकार देने में मदद कर सकते हैं जो ईमानदारी को प्राथमिकता देते हैं। प्रभावी चरित्र शिक्षा कार्यक्रम कई देशों में मौजूद हैं। उदाहरण के लिए, फिनलैंड मूल्य–आधारित शिक्षा पर जोर देता है जिसमें नैतिकता और सत्यनिष्ठा शामिल है। भारत में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 का उद्देश्य नैतिक मूल्यों सहित समग्र शिक्षा को बढ़ावा देना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति स्कूलों को अपने पाठ्यक्रम में सत्यनिष्ठा को

हिंदी मास – 2024 पुरस्कार वितरण समारोह की कुछ झलकियां

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024
के दौरान आयोजित गतिविधियों की झलकियां

शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करता है। छात्रों को सत्यनिष्ठा के महत्व के बारे में पढ़ाकर हम उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए तैयार कर सकते हैं। यह नींव एक ऐसी भावी पीढ़ी बनाने में मदद करेगी जो जीवन के सभी पहलुओं में सत्यनिष्ठा और पारदर्शिता को महत्व देती है।

अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सत्यनिष्ठा भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। निष्पक्ष व्यवहार करने वाले देश सम्मान और विश्वास अर्जित करते हैं। वैश्विक मंच पर भारत ने स्वयं को एक जिम्मेदार देश के रूप में स्थापित किया है। "मेक इन इंडिया" और "एक्ट ईस्ट" जैसी पहल नैतिक व्यापार और सहयोग के प्रति देश की प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं। निष्पक्ष प्रथाओं को बढ़ावा देने से भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंध मजबूत हो सकते हैं और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिल सकता है। जब देश एक–दूसरे पर भरोसा करते हैं, तो उनके व्यापार, रक्षा और पर्यावरण संबंधी चिंताओं सहित विभिन्न मुद्दों पर सहयोग करने की अधिक संभावना होती है।

हालाँकि, सत्यनिष्ठा की संस्कृति का निर्माण चुनौतियों से रहित नहीं है। भ्रष्टाचार और अनैतिक आचरण प्रगति में बाधक हो सकते हैं। भारत में हाल के राजनीतिक घोटालों ने इस मुद्दे को उजागर किया है, जो संभावित रूप से जनता के विश्वास को कम कर रहा है और विकास में बाधक बन रहा है। नागरिकों को अपने नेताओं से जवाबदेही की मांग करनी चाहिए, क्योंकि सक्रिय भागीदारी से अधिक पारदर्शी व्यवस्था बन सकती है। अन्ना हजारे के नेतृत्व में जमीनी स्तर के आंदोलन दर्शाते हैं कि कैसे जनता का दबाव सकारात्मक बदलाव ला सकता है। जन लोकपाल विधेयक के लिए हजारे के अभियान का उद्देश्य भ्रष्टाचार से निपटने के लिए एक स्वतंत्र निकाय बनाना था, जो दिखाता है कि कैसे सामूहिक कार्रवाई से सार्थक सुधार हो सकता है।

प्रभावशाली व्यक्ति सत्यनिष्ठा की संस्कृति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकते हैं। नैतिक व्यवहार को प्राथमिकता देने वाले नेता समाज के लिए उत्कृष्ट उदाहरण स्थापित करते हैं। भारत में, श्वेत क्रांति के जनक कहे जाने वाले डॉ. वर्गीस कुरियन जैसे व्यक्तियों ने दिखाया कि कैसे सत्यनिष्ठा सामाजिक परिवर्तन ला सकती है। किसानों को सशक्त बनाने के लिए उनकी प्रतिबद्धता ने डेयरी उद्योग को बदल दिया और भावी पीढ़ियों को नैतिक मानकों को बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। ऐसे नेता हमें याद दिलाते हैं कि सत्यनिष्ठा प्रगति और सशक्तिकरण के लिए एक शक्तिशाली शक्ति हो सकती है।

सामुदायिक भागीदारी सत्यनिष्ठा का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। जब नागरिक अपने समुदायों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, तो वे विश्वास बनाने में मदद करते हैं। सामुदायिक सेवा परियोजनाओं जैसी स्थानीय पहल, निवासियों के बीच संबंधों को मजबूत कर सकती हैं। ये प्रयास अपनेपन की भावना को बढ़ावा देते हैं और व्यक्तियों को सकारात्मक योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। जब लोग अपने कार्यों के प्रभाव को देखते हैं, तो वे सत्यनिष्ठा को बढ़ावा देने के लिए और अधिक प्रयास करने की संभावना रखते हैं।

आज के डिजिटल युग में, सत्यनिष्ठा को ऑनलाइन व्यवहार तक भी विस्तारित किया जाना चाहिए। अधिक से अधिक लोगों के ऑनलाइन संचार के साथ, नैतिक आचरण का महत्व बढ़ता जा रहा है। डिजिटल संचार में सत्यनिष्ठा और सम्मान के महत्व के बारे में व्यक्तियों को शिक्षित करने से सुरक्षित ऑनलाइन वातावरण बनाया जा सकता है। भारत में, साइबरबुलिंग और गलत सूचना के बारे में जागरूकता बढ़ाने वाले अभियान हमारे डिजिटल जीवन में सत्यनिष्ठा की आवश्यकता पर जोर देते हैं। जिम्मेदार ऑनलाइन व्यवहार को बढ़ावा देने से नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सकता है और अधिक सम्मानजनक ऑनलाइन समुदाय बनाया जा सकता है।

सत्यनिष्ठा को बढ़ावा देने में सोशल मीडिया भी भूमिका निभा सकता है। इन प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल सत्यनिष्ठा का उदाहरण देने वाले व्यक्तियों और संगठनों के बारे में सकारात्मक कहानियाँ साझा करने के लिए किया जा सकता है। इन उदाहरणों को उजागर करने से दूसरों को भी ऐसे ही मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा मिलेगी। सत्यनिष्ठा और पारदर्शिता को बढ़ावा देने वाले अभियान जागरूकता फैला सकते हैं और लोगों को अपने व्यवहार पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।

सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने के लिए भी सत्यनिष्ठा आवश्यक है। गरीबी और असमानता जैसी चुनौतियों के लिए नेताओं और नागरिकों को वास्तविक परिवर्तन लाने के लिए सत्यनिष्ठा के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। जब नेता नैतिक प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो वे ऐसी नीतियों को लागू कर सकते हैं जो जनता को वास्तव में लाभान्वित करती हैं। हाशिए पर पड़े समुदायों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से कार्यक्रम उन्हें लागू करने वालों की सत्यनिष्ठा पर निर्भर करते हैं। यह सुनिश्चित करना कि संसाधनों का

प्रभावी और सत्यनिष्ठा से उपयोग किया जाए, स्थायी प्रगति हासिल करने की कुंजी है।

इसके अलावा, सत्यनिष्ठा सभी नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ा सकती है। जब सत्यनिष्ठा को महत्व दिया जाता है, तो लोग अपने समुदाय में अधिक सुरक्षित महसूस करते हैं। वे अपने पड़ोसियों और नेताओं पर विश्वास करते हैं, जिससे सामाजिक संबंध मजबूत होते हैं। सुरक्षा की यह भावना व्यक्तियों को अपने समुदायों के साथ अधिक जुड़ने और स्थानीय पहलों में योगदान करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

सत्यनिष्ठा को बढ़ावा देने से आर्थिक समृद्धि भी बढ़ सकती है। जब व्यवसाय सत्यनिष्ठा से कार्य करते हैं, तो वे अधिक ग्राहकों को आकर्षित करते हैं और रोजगार के अवसर का निर्माण करते हैं। एक भरोसेमंद व्यावसायिक वातावरण घरेलू और विदेशी दोनों प्रकार के निवेश को बढ़ावा देता है। निवेशक उन देशों का समर्थन करने की अधिक संभावना रखते हैं जहाँ नैतिक आचरण आदर्श हैं। यह निवेश रोजगार सृजन और आर्थिक विकास की ओर ले जाता है, जिससे पूरे समाज को लाभ होता है।

इसके अतिरिक्त, सत्यनिष्ठा की संस्कृति संघर्षों को कम कर सकती है और शांति को बढ़ावा दे सकती है। जो राष्ट्र अपने आचरण में सत्यनिष्ठा को प्राथमिकता देते हैं, उनके ऐसे भ्रष्ट आचरण में शामिल होने की संभावना कम होती है, जिससे विवाद होते हैं। स्पष्ट और सत्यनिष्ठ संचार को बढ़ावा देकर, देश मामलों को बढ़ने से पहले ही सुलझा सकते हैं। इससे घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अधिक स्थिर संबंध बन सकते हैं।

जैसा कि हम भविष्य की ओर देखते हैं, यह स्पष्ट है कि किसी राष्ट्र की समृद्धि के लिए सत्यनिष्ठा की संस्कृति का निर्माण आवश्यक है। यह एक ऐसा वातावरण तैयार करता है जहाँ व्यक्ति सफल हो सकते हैं। जब विश्वास स्थापित हो जाता है, तो नागरिक समाज में योगदान करने के लिए सशक्त महसूस करते हैं, जिससे आर्थिक विकास और सामाजिक सद्भाव बढ़ता है। जो राष्ट्र सत्यनिष्ठा को प्राथमिकता देते हैं वे चुनौतियों का सामना करने और अवसरों का लाभ उठाने के लिए बेहतर तरीके से तैयार होते हैं।

इसके अतिरिक्त, सत्यनिष्ठा की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता होती है। सरकार, व्यवसाय, शैक्षणिक संस्थान और नागरिक सभी की भूमिकाएँ होती हैं। सरकारों को ऐसे कानून बनाने चाहिए जो पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा दें। व्यवसायों को नैतिक आचरण अपनाना चाहिए और उदाहरण प्रस्तुत करके नेतृत्व करना चाहिए। स्कूलों को मूल्यों और नैतिकता की शिक्षा देनी होगी, भविष्य के ऐसे नेताओं को तैयार करना होगा जो सत्यनिष्ठा के महत्व को समझते हों। नागरिकों को अपने नेताओं को जवाबदेह बनाना चाहिए और जीवन के सभी पहलुओं में सत्यनिष्ठा की माँग करनी चाहिए।

दैनिक जीवन में सत्यनिष्ठा को शामिल करना सरल कार्यों के माध्यम से भी प्राप्त किया जा सकता है। जब व्यक्ति सत्यनिष्ठा से कार्य करना चुनते हैं, तो वे सत्यनिष्ठा की संस्कृति में योगदान देते हैं। सत्यनिष्ठा के छोटे–छोटे कार्य प्रभावशाली प्रभाव पैदा कर सकते हैं और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। चाहे बातचीत में सत्यनिष्ठ होना हो या अनैतिक आचरण की रिपोर्ट करना हो, हर कार्य महत्त्व रखता है।

निष्कर्षः सत्यनिष्ठा की संस्कृति को बढ़ावा देना किसी भी राष्ट्र की सफलता के लिए महत्वपूर्ण है। जैसा कि भारत में प्रदर्शित किया गया है, सत्यनिष्ठा शासन, व्यावसायिक प्रथाओं और शिक्षा को बदल सकती है। प्रेरणादायक नेताओं से सीखकर और नैतिक व्यवहार को सक्रिय रूप से बढ़ावा देकर, हम बेहतर भविष्य के लिए प्रयास कर सकते हैं। जैसा कि भारतीय शहीद सरदार भगत सिंह ने कहा था, **"बदलाव लाना युवाओं का कर्तव्य है"**। अपने कार्यों में सत्यनिष्ठा अपनाने से हमारा जीवन समृद्ध होगा और समग्र रूप से राष्ट्र का उत्थान होगा।

राष्ट्र की समृद्धि में सत्यनिष्ठा का योगदान

– राजेश कुमार,
सहायक प्रबंधक

परिचय

सत्यनिष्ठा मौलिक मानवीय गुणों में से एक है। सत्यनिष्ठा, एक ऐसा मूल्य है जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के सशक्त विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह एक ऐसा गुण है जो व्यक्ति को न केवल नैतिक रूप से मजबूत बनाता है, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सत्यनिष्ठा का अर्थ है कार्य के प्रति प्रतिबद्धता, ईमानदारी और निष्ठा। यह एक ऐसी संस्कृति है जो व्यक्ति को अपने कार्यों के प्रति जवाबदेह बनाती है एवं समाज में विश्वास और पारदर्शिता का वातावरण बनाती है।

सत्यनिष्ठा को सिद्धांत या नैतिक गुण के रूप में परिभाषित किया गया है। ईमानदारी, नैतिकता और अखंडता सत्यनिष्ठा के गुण हैं। यह उस नैतिक आचरण को प्रदर्शित करता है जो मानवीय मूल्यों का सम्मान करते हुए निष्पक्षता और जवाबदेही की गारंटी देता है, जो सभी लोगों के बीच विश्वास को प्रेरित करते हैं और शासन प्रक्रिया में सहभागिता को प्रोत्साहन देते हैं। किसी के निजी और व्यावसायिक जीवन में केवल अनैतिक या भ्रष्ट व्यवहार से बचने के विपरीत, सत्यनिष्ठा जीवन जीने के निरपेक्ष तरीके को दर्शाती है, जिसमें व्यक्ति उच्चतम लक्ष्यों और मानकों को बनाये रखता है।

सत्यनिष्ठा की संस्कृति राष्ट्र की समृद्धि में कैसे योगदान देती है इसके लिए हम नीचे दिये गये विभिन्न आयामों के माध्यम से प्रकाश डालते हैं।

व्यक्तिगत विकास में सत्यनिष्ठा

सत्यनिष्ठा व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक सत्यनिष्ठ व्यक्ति हमेशा सत्य बोलता है और ईमानदारी के पथ पर चलता है। इससे व्यक्ति में आत्मविश्वास बढ़ता है और वह दूसरों के साथ बेहतर संबंध स्थापित कर पाने में सक्षम होता है। सत्यनिष्ठा व्यक्ति को नैतिक मूल्यों से जोड़ती है और उसे सही और गलत के बीच अंतर करने में मदद करती है।

- **आत्मविश्वास में वृद्धिः** सत्यनिष्ठा व्यक्ति को आत्मविश्वास को बढाती है। जब कोई व्यक्ति सत्य बोलता है और ईमानदारी से काम करता है, तो उसे किसी भी परिस्थिति में डर, तनाव या मायूसी महसूस नहीं होती है।
- **समाज में सम्मानः** एक सत्यनिष्ठा व्यक्ति समाज में सम्मान प्राप्त करता है। लोग उसके शब्दों पर विश्वास करते हैं और उसकी राय को महत्व देते हैं।
- **मानसिक शांतिः** सत्यनिष्ठा व्यक्ति को मानसिक शांति प्रदान करती है। उसे झूठ बोलने या धोखा देने का बोझ नहीं उठाना पड़ता।
- **नेतृत्व क्षमता का विकासः** सत्यनिष्ठा व्यक्ति में नेतृत्व क्षमता का विकास करती है। लोग एक सत्यनिष्ठ व्यक्ति पर विश्वास जताते हैं और उसके नेतृत्व में काम करने के लिए तैयार रहते हैं।

सामाजिक विकास में सत्यनिष्ठा

सत्यनिष्ठा का व्यक्ति के जीवन पर ही नहीं, बल्कि समाज के विकास एवं उत्थान पर भी गहरा प्रभाव पड़ता है। एक सत्यनिष्ठ समाज में लोग एक–दूसरे पर विश्वास करते हैं, जिससे सामाजिक आधार मजबूत होता है।

- **विश्वास का वातावरणः** सत्यनिष्ठा का वातावरण समाज में विश्वास एवं समन्वय का निर्माण करता है। जब लोग एक–दूसरे पर भरोसा करते हैं, तो वे मिलकर काम करते हैं और विकास के नए रास्तों का निर्माण हैं।
- **भ्रष्टाचार में कमीः** सत्यनिष्ठा भ्रष्टाचार को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब लोग सत्य बोलते हैं और नियमों का अनुपालन करते हैं, तो समाज से भ्रष्टाचार खत्म होने लगता है।

- **समाज में एकता:** सत्यनिष्ठा समाज में एकता का निर्माण करती है। जब लोग एक–दूसरे के प्रति विश्वासदायी होते हैं, तो वे आपसी मतभेदों को दूर करके एक साथ मिलकर कार्य करते हैं।
- **कानून का शासन:** सत्यनिष्ठा कानून के शासन को मजबूत स्तंभ प्रदान करती है। जब लोग कानून का पालन करते हैं, तो समाज में शांति और भाईचारे की व्यवस्था बनी रहती है।

प्रशासन में सत्यनिष्ठा

सत्यनिष्ठा प्रशासन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले आवश्यक मूल्यों में से एक है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि सरकारी अधिकारी जनता के सर्वोत्तम हितों को ध्यान में रखते हुए ईमानदारी और पारदर्शिता के साथ अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का पालन कर रहे हैं। शासन में सत्यनिष्ठा की गारंटी के लिये भ्रष्टाचार की अनुपस्थिति एक मूलभूत आवश्यकता है। शासन में सत्यनिष्ठा वह शब्द है जिसका उपयोग शासन प्रक्रिया के अंदर मजबूत नैतिक मानदंडों को स्थापित करने के लिये किया जाता है। ईमानदारी, जवाबदेही, अखंडता, उदारता, करूणा और अन्य सकारात्मक लक्षण उत्कृष्ट शासन के लिये सत्यनिष्ठ बनाते हैं।

- **लोगों का सरकार पर विश्वास बने रहना:** प्रभावी ढंग से शासन करने की किसी भी सरकार की क्षमता में सार्वजनिक प्राधिकरणों पर विश्वास होना एक महत्त्वपूर्ण कारण है। सरकार और उसके संस्थानों में जनता का विश्वास बनाए रखने के लिये सत्यनिष्ठा आवश्यक है। सत्यनिष्ठा से कार्य करने वाले सरकारी अधिकारी सार्वजनिक हित की सेवा हेतु कटिबद्ध रहते हैं और वे जिन नागरिकों की सेवा करते हैं उनका विश्वास अर्जित कर सकते हैं।
- **पारदर्शिता एवं जवाबदेही:** सरकारी कार्यों में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिये सत्यनिष्ठा आवश्यक है। सत्यनिष्ठा से कार्य करने वाले सरकारी कर्मचारी अपने कार्यों और निर्णयों में पारदर्शी होते हैं और वे अपने कार्यों के प्रति जवाबदेह होते हैं। इससे सरकारी सेवा में भ्रष्टाचार को रोकने में मदद मिलने के साथ यह सुनिश्चित हो सकता है कि सार्वजनिक संसाधनों का उपयोग लक्षित उद्देश्यों के लिये हो रहा है।
- **दक्षता एवं प्रभावशीलता:** प्रशासन में सत्यनिष्ठा से सरकारी कार्यों की दक्षता, सामाजिक समन्वयता और प्रभावशीलता में सुधार हो सकता है। जब सरकारी अधिकारी सत्यनिष्ठा के साथ कार्य करते हैं तो वे ऐसे निर्णय लेते हैं जो जनता के हित में होते हैं। इससे बेहतर नीतिगत परिणाम के साथ अधिक प्रभावी एवं कुशल सेवा वितरण हो सकता है।

आर्थिक विकास में सत्यनिष्ठा

सत्यनिष्ठा का आर्थिक विकास पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ता है। एक सत्यनिष्ठ समाज में निवेशक निवेश करने के लिए अग्रणी रहते हैं, जिससे रोजगार के अवसर बढ़ते हैं और आर्थिक विकास में वृद्धि होती है।

- **निवेश को बढ़ावा:** सत्यनिष्ठा निवेश को बढ़ावा देती है। जब निवेशक को पता होता है कि देश में पारदर्शिता और जवाबदेही है, तो वह निवेश करने के लिए उत्साहित रहता है।
- **रोजगार के अवसर:** निवेश के बढ़ने से रोजगार के अवसर पैदा होते हैं, जिससे बेरोजगारी की समस्या में कमी होती है।
- **आर्थिक वृद्धि:** रोजगार के अवसरों के बढ़ने से लोगों की आमदनी बढ़ती है, जिससे खपत बढ़ती है और आर्थिक वृद्धि होती है।

सत्यनिष्ठा और राजनीतिक विकास

सत्यनिष्ठा राजनीतिक विकास के लिए भी अति आवश्यक है। एक सत्यनिष्ठ राजनेता जनमानस के प्रति जवाबदेह होता है और देश के हित में कार्य करता है।

- **लोकतंत्र को मजबूत करना:** सत्यनिष्ठा लोकतंत्र की मजबूती के लिए आवश्यक है। जब राजनेता सत्य बोलते हैं और अपनी जिम्मेवारियों का निवर्हन करते हुए जनहित में कार्य करते हैं, तो लोकतंत्र मजबूत होता है।
- **भ्रष्टाचार में कमी:** सत्यनिष्ठा राजनीतिक भ्रष्टाचार को कम करती है। जब राजनेता सत्यनिष्ठा के आदर्शों और मूल्यों को अपनाते हैं, तो वे भ्रष्टाचार से दूर रहते हैं।

- **जनता का विश्वासः** सत्यनिष्ठा राजनेता और जनता के बीच विश्वास का सेतू होती है। जब जनता को पता होता है कि उसके प्रतिनिधि सत्यनिष्ठा के साथ काम कर रहे हैं, तो वह उन पर विश्वास बनाये रखती है।

व्यवसाय में सत्यनिष्ठा

व्यवसायिक स्तर पर सत्यनिष्ठा का अर्थ नैतिक दृष्टि से अच्छा/सही आचरण और क्षमता/नैतिक सुयोग्यता है। जिस व्यवसाय के साथ व्यक्ति का संबंध होता है उस व्यवसाय के नियमों, उद्देश्यों और मूल्यों के अनुसार कार्य करना अनिवार्य होता है ।

- **वचनबद्धताः** व्यवसाय के लिए उच्च स्तर की वचनबद्धता सम्मिलित होती है। जिससे ग्राहकों और बाजार में व्यवसायी के प्रति विश्वास बना रहता है ।
- **सहजताः** सत्यनिष्ठा को नैतिकता के रूप में देखा जाता है। व्यापार में सहजता व्यापार के वर्ग के आधार पर भेदभाव के बिना आचरण को प्रखर रूप देती है ।

सत्यनिष्ठा और अंतरराष्ट्रीय संबंध

सत्यनिष्ठा अंतरराष्ट्रीय संबंधों को मजबूत बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक सत्यनिष्ठ देश अन्य देशों के साथ सौहार्दपूर्ण और विश्वासपूर्ण संबंध स्थापित कर सकता है।

- **अंतरराष्ट्रीय सहयोगः** सत्यनिष्ठा अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देती है। जब कोई देश सत्यनिष्ठा के लिए जाना जाता है, तो अन्य देश उसके साथ व्यापार और परस्पर सहयोग करने के लिए तैयार होते हैं।
- **देश की छविः** सत्यनिष्ठा देश की छवि को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेहतर बनाती है। जब कोई देश सत्यनिष्ठा के लिए जाना जाता है, तो अन्य देश उसके साथ व्यापार और सहयोग करने के लिए तैयार होते हैं।

सत्यनिष्ठा को बढ़ावा देने के उपाय

सत्यनिष्ठा को बढ़ावा देने के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं:

- शिक्षा के माध्यम सेः बच्चों को बचपन से ही सत्यनिष्ठा के महत्व के बारे में सिखाया एवं पढ़ाया जाना चाहिए। स्कूलों में सत्यनिष्ठा पर आधारित पाठ्यक्रम शामिल किए जाने चाहिए।
- **संचार माध्यमः** मीडिया को सत्यनिष्ठा को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। मीडिया को सत्यनिष्ठा के उदाहरणों को प्रस्तुत करना चाहिए और भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए।
- **सरकार की नीतियांः** सरकार को ऐसी नीतियां बनानी चाहिए जो सत्यनिष्ठा को बढ़ावा दें। भ्रष्टाचार के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए जिससे भ्रष्टाचार के खिलाफ सही उदाहरण प्रस्तुत हो।
- **समाज का योगदानः** समाज के सभी वर्गों को सत्यनिष्ठा को बढ़ावा देने में योगदान देना चाहिए। हमें अपने आसपास के लोगों को सत्य बोलने और ईमानदारी से काम करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

निष्कर्ष

सत्यनिष्ठा एक ऐसा मूल्य है जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। सत्यनिष्ठा की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए हमें अपने बच्चों को बचपन से ही सत्य बोलने, कार्य के प्रति प्रतिबद्धता, ईमानदारी और निष्ठा के प्रति प्रेरित करना होगा। हमें अपने समाज में सत्यनिष्ठा के मूल्यों को स्थापित करने के लिए प्रयास करने होंगे। जब हम सत्यनिष्ठा के मार्ग पर चलेंगे, तभी हम एक समृद्ध और खुशहाल राष्ट्र का निर्माण कर पाएंगे ।

राष्ट्रीय आवास वित्त एवं वित्तीय समावेशन

– धीरज कुमार,
क्षेत्रीय प्रबंधक

भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्था हमेशा वित्तीय संसाधनों की तलाश करती है। क्रेडिट की बढ़ती मांग और पारंपरिक वित्तपोषण संस्थानों (जैसे बैंकों और वित्तीय संस्थानों) को इस तरह की मांग को पूरा नहीं कर पाते हैं जिससे अन्य प्रकार के वित्तपोषण के लिए जगह बनाते हैं।

आवास क्षेत्र में लम्बे समय से धन की कमी रही है जिसके कारण आवासों की कमी रही है। भारत सरकार ने देश में गौण आवासीय बाजार के विकास को बहुत महत्व दिया है जिससे आवास क्षेत्र में निधियों का प्रवाह बढ़े, मकानों की संख्या में वृद्धि हो और जिसके फलस्वरूप जनता को वहनीय आवास ऋण मिलने में सुविधा हो। आवास वित्त बाजार को बढ़ावा देने के लिए बैंको एवं आवास वित्त संस्थानों की भूमिका तभी प्रासंगिक होगी जब बैंकों और आवास वित्त संस्थानों की भूमिका का क्रियान्वयन की रूपरेखा का सुनियोजित ढंग से पालन किया जाए। आवास वित्त बाजार को प्रगतिशील करने हेतु न सिर्फ बैंक अपितु केंद्र सरकार, राज्य सरकार एवं बैंकों और आवास वित्त संस्थानों की भूमिका को भी प्रासंगिक करना होगा जिससे कि आवास वित्त बाजार को बढ़ावा दिया जा सके।

आवास वित्त बाजार को बढ़ावा देने हेतु केन्द्र सरकार की भूमिका

- आवास और शहरी बुनियादी सुविधाओं के संवर्धन के लिए केंद्र सरकार द्वारा विशेष रियायत का प्रावधान किया जाना चाहिए एवं वित्त मंत्रालय इस दिशा में आवास वित्त बाजार को बढ़ावा देने हेतु उपयुक्त वित्तीय रियायतें उपलब्ध कराना उसकी प्राथमिकता होनी चाहिए जिससे प्रधानमंत्री आवास योजना के फलीभूत होने में वित्त मंत्रालय अपनी अहम उपयोगिता सिद्ध कर सकता हैं एवं देश में आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्गों और निम्न आय वर्गों को कुछ विशेष प्रावधानों द्वारा उनका विशेष ध्यान रखते हुये उन्हें इस सुविधा का लाभ प्रदान किया जा सकता है एवं आवास वित्त बाजार की संभावनाओं को विकसित किया जा सकता हैं।
- आवास क्षेत्र के विकास हेतु केंद्र सरकार को नगरों एवं शहरों से दूर पारिस्थितिकी पर्यावास को विकसित करने हेतु कृत संकल्प होना होगा जिससे उस क्षेत्र का समुचित विकेन्द्रीकरण करके, उस क्षेत्र में विकास की संभावनाओं को विकसित करके, संतुलित क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा दिया जा सकता हैं एवं आवास वित्त बाजार को परिपोषित किया जा सकता हैं।
- प्रमुख कारणों में से एक जो की आवास वित्त बाजार की संभावनाओं को विकसित करने हेतु आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्गों और निम्न आय वर्गों के लिए बुनियादी सुविधाओं से युक्त आवास को बढ़ावा देने हेतु एक सशक्त माध्यम की उपलब्धता सुनिश्चित करनी होगी एवं इसके लिए उपयुक्त वित्त प्रणाली को विकसित करने हेतु केंद्र सरकार को आवश्यक कदम उठाने होंगे एवं इस क्षेत्र को विकास को बढ़ावा देना होगा ।
- केंद्र सरकार को राज्य सरकारों एवं उससे संबंधित सरकारों को राष्ट्रीय शहरी आवास एवं पर्यावास नीति समयबद्ध आधार पर क्रियान्वित करने एवं उसे जमीनी स्तर पर अपनाने एवं क्रियान्वित करने के लिए परामर्श देना होगा जिससे की आवास वित्त बाजार की उपलब्धि को सुनिश्चित करके एवं मार्ग निर्देशित करके इस क्षेत्र मे विकास की गति को क्रियांवित किया जा सकता है ।

आवास वित्त बाजार को बढ़ावा देने हेतु राज्य सरकारों की भूमिका

- आवास वित्त बाजार को बढ़ावा देने हेतु केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, शहरी स्थानीय निकायों, बैंकों/माइक्रो फाइनेंस संस्थानों को एक साथ मिलकर, इस क्षेत्र के विकास हेतु एक प्रारूप की संकल्पना को प्रतिरूपित करना होगा एवं इस क्षेत्र के विकास को बढ़ावा देने हेतु एवं उस क्षेत्र में रहने वाले नागरिकों/भावी लाभार्थियों के बीच साझेदारी के साथ समन्वय स्थापित करना होगा ।राज्य सरकारों को गंदी एवं मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों को जीवन स्तर में सुधार लाने हेतु प्रयास करने एवं सरकारों द्वारा चलाये गए विकास कार्यक्रमों से उन्हे अवगत करना होगा एवं स्थानीय गंदी बस्तियों के उन्नयन को बढ़ावा देने हेतु उन्हे प्रोत्साहित करना होगा एवं विकास की धारा को अपनाने हेतु प्रेरित करना होगा।
- स्लम विकास परियोजनाओं को बढ़ावा देना होगा एवं संघठित टाउनशिप विकास परियोजनाओं के कार्यान्वयन हेतु शहरी भूमि बोर्डों/अशासकीय एजेंसियों/निजी क्षेत्र/सहकारी क्षेत्र/स्वयं सेवी संगठनों से सहयोग करके उस क्षेत्र में विकास पूर्ण कार्य को बढ़ावा देना होगा एवं सुविधादाता व सामर्थ्यकारी संस्थान के रूप में कार्य करने हेतु प्रेरित करना होगा।
- आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्गों और निम्न आय वर्ग के लाभार्थियों के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता करने हेतु राज्य सरकारों को प्रशासनिक स्तर पर कार्यवाही करनी होगी। राज्य सरकारों को बड़ी आवासीय एवं पर्यावास विकास परियोजनाओं के लिए धन की उपलब्धता सुनिश्चित करना एवं इसे आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्गों और निम्न आय वर्ग के लाभार्थियों को लाभ पहुँचे, यह सुनिश्चित करने हेतु प्रशासनिक अधिकारियों को इसकी जिम्मेदारी सौपनी होगी।
- राज्य सरकारों को भवन निर्माण सामग्री के स्थानीय उत्पादन को प्राथमिकता देनी होगी जिससे रोजगार सृजन हो सके एवं राज्य में बेरोजगारी की समस्या से निजात मिलेगी एवं इन उत्पादकता को विकेन्द्रीकरण करके रोजगार की संभावनावों को सृजन करना होगा।
- राज्य सरकारों द्वारा मास्टर प्लान तैयार करके राज्य स्तरीय क्षेत्रीय योजना संबंधित एजेंसियों द्वारा शहरी गरीबों के लिए भूमि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराई जाने हेतु समुचित कार्यवाही की जानी चाहिए एवं लाभकर्ताओं को इस दिशा में क्रियान्वित किए जाने वाले उपायों के बारे में सूचित किया जाना चाहिए।

- राज्य सरकारों को आवासीय तथा बुनियादी सुविधाओं की परियोजनाओं के कार्यान्वयन हेतु सार्वजनिक–निजी भागीदारी को बढ़ावा देने हेतु आवश्यक कदम उठाए जाने हेतु क्रियान्वित किया जाना चाहिए।
- राज्य सरकार को आवास वित्त बाजार को बढ़ावा देने हेतु सहकारी ग्रुप आवास समितियों, कर्मचारी संगठनों, गैर–सरकारी संगठनों को समुचित प्रावधान सुनिश्चित किए जाने चाहिए। इसके अतिरिक्त समुदाय आधारित संगठनों को आवास की सुविधा उपलब्ध करने के लिए माइक्रो–फाइनेंस और आवास विकास से संबंधित मामलों में शहरी स्थानीय निकायों/एजेंसियों से भागीदारी करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु प्रावधान किए जाने चाहिए।

आवास वित्त बाजार को बढ़ावा देने हेतु बैंको की भूमिका

- आवास वित्त बाजार को बढ़ावा देने हेतु वित्तीय उत्पादों को विकसित करना जिनसे आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्गों के लिए उत्पादों को विकसित करके इस तबके को विकास के मुख्यधारा में सम्मिलित करना एवं वित्त आवास बाजार को पोषित करने में बैंकों की भूमिका सर्वोपरि होगी। इसके अतिरिक्त निम्न आय वर्ग के लाभार्थी को बीमा की सुविधा भी प्रदान की जानी चाहिए

जिससे देश आवास वित्त बाजार को बढ़ावा मिल सके एवं देश में रोजगार की संभावना को विकसित किया जा सके एवं बैंको द्वारा इस इस कार्य हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ।

- बैंक द्वारा नित्य नए–नए वित्तीय उपायों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए एवं आवास वित्त बाजार को बढ़ावा देना हेतु बंधक (mortgage) समर्थित प्रतिभूतिकरण बाजार और सेकेण्डरी बंधक बाजार का विकास सुनिश्चित करना होगा जिससे देश में आवास वित्त बाजार की संभावनाओं को विकसित किया जा सके ।
- बैंक द्वारा आवास ऋणों को आय अनुसार प्रसार/मजबूत करने के उपाय करना चाहिए जिससे गरीबी रेखा से नीचे के लोगों और आर्थिक दृष्टि से कमजोर लाभार्थियों की संख्या बढ़े एवं देश में आवास वित्त बाजार की संभावनाओं का विकास किया जा सके ।
- बैंकों को आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्गों और निम्न आय वर्ग को लक्षित करते हुए आवास वित्त की नई–नई योजनाएं तैयार करना चाहिए एवं इस दिशा में केंद्र सरकार द्वारा लक्षित कार्यक्रमों के तहत सरकार द्वारा जारी की गयी सब्सिडी का लाभ आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्गों और निम्न आय वर्ग को मिलना चाहिए जिससे देश में प्रत्येक नागरिकों को आवास की सुविधा मिले तथा "सबके लिए आवास" की परिकल्पना सिद्ध हो सके।

केन्द्रीय बैंक (रिजर्व बैंक) को गैर–बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) पर बने वित्तीय दबाव को कम करने और उसके कारोबार में तेजी लाने के उद्देश्य से बैंकों को एनबीएफसी के माध्यम से प्राथमिक क्षेत्रों को ऋण देने के निर्देश देते हुये कई क्षेत्रों को शामिल किया जाना चाहिए एवं रिजर्व बैंक को प्राथमिक क्षेत्रों के लिए ऋण प्रवाह में बढ़ोतरी कर निर्यात और रोजगार सृजन के जरिये आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य तथा उन क्षेत्रों में एनबीएफसी की भूमिका को भी कई क्षेत्रों को प्राथमिक क्षेत्र में शामिल किया जाना चाहिए।

वहीं अर्थव्यवस्था पर दबाव कम करने के उद्देश्य से गैर–बैंकिंग वित्तीय कंपनियों की तरलता और ऋण उठाव बढ़ाने के लिए रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने मौद्रिक नीति की समीक्षा करके एनबीएफसी को बैंकों द्वारा दिये जाने वाले ऋण की सीमा बढ़ाने का निर्णय लिया गया है। वर्तमान में कोई बैंक अपनी टीयर–1 पूँजी का अधिकतम 15 प्रतिशत एक ही एनबीएफसी को दे सकता है। एनबीएफसी के अलावा अन्य क्षेत्रों की एक ही कंपनी के लिए यह सीमा 20 प्रतिशत है जिसे विशेष परिस्थितियों में बैंक के बोर्ड की सहमति से 25 प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता है। एनबीएफसी के लिए अभी अब इस सीमा को बढ़ाकर 20 प्रतिशत करने का फैसला किया गया है।

विशेष प्रोत्साहन

इसके अलावा वाणिज्यिक बैंक प्राथमिकता वाले क्षेत्रों के लिए एनबीएफसी के माध्यम से भी ऋण दे सकेंगे। कृषि क्षेत्र के लिए इस तरह के ऋण की सीमा 10 लाख रुपये और सूक्ष्म एवं लघु उद्योगों के लिए 20 लाख रुपए रखी गयी है। आवास क्षेत्र के लिए यह व्यवस्था पहले से थी जिसकी सीमा 10 लाख रुपए से बढ़ाकर 20 लाख रुपए की गयी है। निर्यात एवं रोजगार को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने और प्राथमिकता वाले चुनिंदा क्षेत्रों के लिए ज्यादा ऋण उपलब्ध कराने के लिए एनबीएफसी की भूमिका को स्वीकारते हुये यह कदम उठाया गया है।

आरबीआई ने क्रेडिट कार्ड के ऋण को छोड़कर एनबीएफसी द्वारा दिये गये अन्य उपभोक्ता ऋणों का जोखिम भारांक 125 प्रतिशत से घटाकर 100 प्रतिशत कर दिया है। इससे भी एनबीएफसी का तुलन पत्र (बैलेंस शीट) सुधारने में मदद मिलेगी।

शहरी आवास विकास में डिजिटल ट्विन प्रौद्योगिकी

– डॉ मोनिका भूटानी,
(पत्नी मुनीष भूटानी, सहायक महाप्रबंधक)

परिचय

शहरी परिदृश्य तेजी से बदल रहा है, जो स्मार्ट और अधिक टिकाऊ शहरों की आवश्यकता से प्रेरित है। इस बदलाव को गति देने वाले प्रमुख तकनीकी नवाचारों में से एक है डिजिटल ट्विन प्रौद्योगिकी। यह तकनीक, जिसे मूल रूप से औद्योगिक उपयोगों के लिए विकसित किया गया था, अब शहरी योजना, रियल एस्टेट और आवास विकास में अपना स्थान बना चुकी है। डिजिटल ट्विन प्रौद्योगिकी जटिल शहरी प्रणालियों के सिमुलेशन, निगरानी, और अनुकूलन का एक शक्तिशाली साधन बनकर उभरी है। शहरी आवास के संदर्भ में, डिजिटल ट्विन प्रौद्योगिकी से दक्षता, लागत–प्रभावशीलता और उपयोगकर्ता अनुभव में सुधार हो सकता है, जिससे अधिक स्मार्ट और मजबूत शहरी आवासीय क्षेत्रों का निर्माण संभव हो सकेगा।

डिजिटल ट्विन प्रौद्योगिकी क्या है?

डिजिटल ट्विन एक भौतिक संपत्ति, प्रणाली या प्रक्रिया की एक आभासी प्रतिकृति होती है, जो वास्तविक दुनिया में इसकी स्थिति का वास्तविक समय में प्रतिरूपण करती है। यह इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), क्लाउड कंप्यूटिंग, और डेटा विश्लेषण को मिलाकर एक गतिशील, डेटा–आधारित मॉडल बनाता है। सेंसर और अन्य स्रोतों से डेटा को निरंतर एक डिजिटल प्लेटफॉर्म में फीड करके, डिजिटल ट्विन उस भौतिक वातावरण के बारे में वास्तविक समय की जानकारी प्रदान करते हैं जिसे वे दर्शाते हैं।

उदाहरण के लिए, एक भवन के डिजिटल ट्विन में उसकी डिजाइन, निर्माण, उपभोग पैटर्न, ऊर्जा खपत, और रखरखाव की आवश्यकताओं का डेटा शामिल हो सकता है। यह संबंधित पक्षों को भवन के प्रदर्शन की निगरानी करने, संभावित समस्याओं का पूर्वानुमान लगाने और उसकी संचालन क्षमता को अनुकूलित करने में मदद करता है।

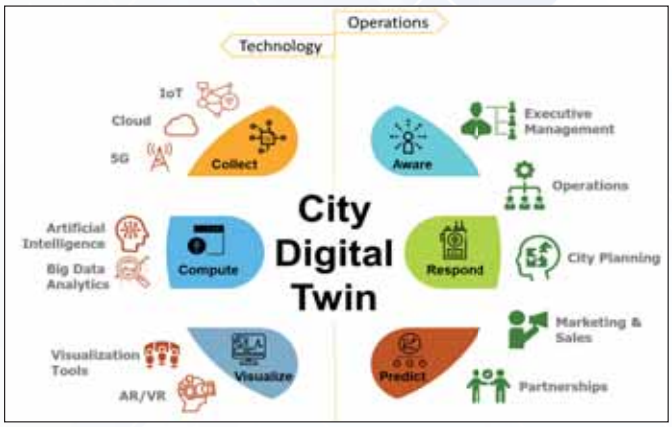

चित्र 1 : "सिटी डिजिटल ट्विन प्रौद्योगिकी का अवलोकन"

चित्र 1 सिटी डिजिटल ट्विन प्रौद्योगिकी की अवधारणा को दर्शाता है, जो तकनीकी और परिचालन दोनों पहलुओं को जोड़कर काम करता है। इसमें डेटा संग्रह (Collect), प्रसंस्करण (Compute), दृश्यकरण (Visualize), पूर्वानुमान (Predict), जागरूकता (Aware), और प्रतिक्रिया (Respond) जैसी प्रक्रियाओं के माध्यम से शहरी योजना और प्रबंधन को बेहतर बनाया जाता है। इसका उपयोग शहर के प्रबंधन, योजना, और संचालन में सुधार के लिए किया जाता है।

शहरी आवास में डिजिटल ट्विन प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग

1. सर्वोत्तम भवन डिजाइन और निर्माण

- डिजिटल ट्विन प्रौद्योगिकी आर्किटेक्ट्स और इंजीनियरों को निर्माण शुरू होने से पहले एक भवन का आभासी मॉडल बनाने की अनुमति देती है। विभिन्न डिजाइन विकल्पों का सिमुलेशन करके, वे सबसे कुशल और टिकाऊ डिजाइन की पहचान कर सकते हैं।
- इंजीनियर डिजिटल ट्विन का उपयोग करके विभिन्न सामग्रियों, संरचनात्मक विन्यासों, और पर्यावरणीय स्थितियों का परीक्षण कर सकते हैं जिससे कचरे को कम किया जा सके और ऊर्जा खपत को अनुकूलित किया जा सके। इससे निर्माण तेजी से और कम लागत में पूरा किया जा सकता है।

2. सुधारित सुविधा प्रबंधन

- निर्माण के बाद, डिजिटल ट्विन सुविधा प्रबंधन के लिए एक मूल्यवान उपकरण बना रहता है। भवन प्रबंधक HVAC (हीटिंग, वेंटिलेशन, और एयर कंडीशनिंग), प्रकाश व्यवस्था और सुरक्षा जैसे विभिन्न प्रणालियों के प्रदर्शन की वास्तविक समय में निगरानी कर सकते हैं।

- AI एल्गोरिदम द्वारा समर्थित भविष्यवाणी रखरखाव संभव हो जाता है। उदाहरण के लिए, लिफ्ट या हीटिंग सिस्टम में लगे सेंसर यह अनुमान लगा सकते हैं कि कब कोई घटक खराब होने वाला है, जिससे खराबी होने से पहले ही समय पर रखरखाव किया जा सकता है। इससे भवन के संचालन की निरंतरता बनी रहती है और निवासियों के लिए रुकावटें कम होती हैं।

3. ऊर्जा दक्षता और स्थिरता

- शहरी आवास में सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक ऊर्जा खपत को कम करना है। डिजिटल ट्विन ऊर्जा उपयोग पैटर्न की निरंतर निगरानी और विश्लेषण को सक्षम करते हैं, जिससे भवन प्रबंधक अक्षमियों की पहचान कर सकते हैं और ऊर्जा खपत को अनुकूलित कर सकते हैं।

- उदाहरण के लिए, एक डिजिटल ट्विन विभिन्न परिदृश्यों का सिमुलेशन कर सकता है, जैसे कि थर्मोस्टेट सेटिंग्स को समायोजित करना या प्रकाश व्यवस्था के शेड्यूल में परिवर्तन करना, जिससे सबसे ऊर्जा–कुशल सेटअप पाया जा सकता है। इससे उपयोगिता बिलों में महत्वपूर्ण बचत हो सकती है और ग्रीन बिल्डिंग प्रमाणन में योगदान हो सकता है।

केस स्टडी: शहरी आवास में डिजिटल ट्विन के अनुप्रयोग

1. सिंगापुर: डिजिटल ट्विन प्रौद्योगिकी में अग्रणी

- सिंगापुर शहरी योजना और आवास के लिए डिजिटल ट्विन प्रौद्योगिकी अपनाने में वैश्विक नेता रहा है। शहर–राज्य की "वर्चुअल सिंगापुर" पहल का उद्देश्य पूरे शहर का एक विस्तृत 3D डिजिटल ट्विन बनाना है। यह मॉडल विभिन्न स्रोतों से डेटा को एकीकृत करता है, जिसमें सैटेलाइट इमेजरी, यातायात डेटा और IoT सेंसर शामिल हैं। वर्चुअल सिंगापुर शहरी योजनाकारों को नए आवास परियोजनाओं के प्रभाव का सिमुलेशन करने, सार्वजनिक सेवाओं की तैनाती को अनुकूलित करने और ऊर्जा प्रबंधन को बढ़ाने की अनुमति देता है। उदाहरण के लिए, डिजिटल ट्विन यह मॉडल कर सकता है कि नई गगनचुंबी इमारतें हवा के प्रवाह और सूर्य के प्रकाश के संपर्क को कैसे प्रभावित करेंगी, जिससे शहरी हरित क्षेत्रों की बेहतर डिजाइन संभव हो सके।

2. हडसन यार्ड्स, न्यूयॉर्क सिटी

न्यूयॉर्क सिटी के हडसन यार्ड्स में डिजिटल ट्विन प्रौद्योगिकी का उपयोग करके एक महत्वाकांक्षी रियल एस्टेट विकास किया गया है। विकास टीम ने एक डिजिटल ट्विन का निर्माण किया ताकि परिसर में इमारतों के संचालन की निगरानी और अनुकूलन किया जा सके। विभिन्न प्रणालियों, जैसे लिफ्ट, HVAC और जल आपूर्ति से वास्तविक समय में डेटा संग्रह के माध्यम से, डिजिटल ट्विन ने ऊर्जा खपत को कम करने और रखरखाव की दक्षता में सुधार करने में मदद की है। इसने स्थान उपयोग में भी सुधार किया है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि परिसर निवासियों और वाणिज्यिक किरायेदारों की आवश्यकताओं को पूरा कर सके।

डिजिटल ट्विन प्रौद्योगिकी लागू करने की चुनौतियां

हालांकि डिजिटल ट्विन प्रौद्योगिकी शहरी आवास के लिए अपार संभावनाएं प्रदान करती है, लेकिन कई चुनौतियों का समाधान किया जाना बाकी है:

- डिजिटल ट्विन विभिन्न सेंसरों और उपकरणों से निरंतर डेटा स्ट्रीम पर निर्भर करते हैं। इस डेटा में अक्सर भवन के निवासियों की दैनिक आदतों और ऊर्जा खपत पैटर्न जैसी संवेदनशील जानकारी शामिल होती है। डेटा सुरक्षा और गोपनीयता सुनिश्चित करना अनधिकृत पहुंच या दुरुपयोग को रोकने के लिए महत्वपूर्ण है।

- निवासियों के डेटा के उपयोग और भंडारण के संबंध में पारदर्शिता और सहमति आवश्यक है, जिससे गोपनीयता संबंधी चिंताओं को दूर किया जा सके।

- डिजिटल ट्विन प्रौद्योगिकी की स्थापना में प्रारंभिक निवेश में IoT सेंसर, क्लाउड स्टोरेज, डेटा प्रोसेसिंग इंफ्रास्ट्रक्चर, और कुशल कर्मियों की लागत शामिल होती है। छोटे डेवलपर्स या नगरपालिका अधिकारियों के लिए यह निवेश एक चुनौती बन सकता है।
- हालांकि दीर्घकालिक लाभ, जैसे कि ऊर्जा की बचत और रखरखाव की लागत में कमी, इस प्रारंभिक निवेश की भरपाई कर सकते हैं, लेकिन प्रारंभिक लागत का प्रबंधन करना एक प्रमुख बाधा बना रहता है।

शहरी आवास विकास में डिजिटल ट्विन्स का भविष्य

शहरी आवास में डिजिटल ट्विन प्रौद्योगिकी का भविष्य बहुत आशाजनक है। जैसे–जैसे शहर अधिक स्मार्ट और टिकाऊ बनने की दिशा में प्रयास कर रहे हैं, डिजिटल ट्विन भवन संचालन को अनुकूलित करने, निवासियों के अनुभव को बेहतर बनाने, और शहरी योजना प्रक्रियाओं को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और मशीन लर्निंग के साथ डिजिटल ट्विन्स का एकीकरण और भी परिष्कृत सिमुलेशन सक्षम करेगा, जिससे आवास विकास का सक्रिय प्रबंधन संभव हो सकेगा।

इसके अतिरिक्त, 5G नेटवर्क का उदय डिजिटल ट्विन्स की क्षमताओं को और बढ़ावा देगा, जिससे डेटा ट्रांसफर की गति तेज होगी और विलंबता कम होगी। यह स्मार्ट होम्स में IoT उपकरणों की रीयल–टाइम निगरानी और नियंत्रण को सक्षम करेगा, जिससे जवाबदेही का अभूतपूर्व स्तर प्राप्त होगा।

चित्र 2 : शहरी आवास विकास में डिजिटल ट्विन्स की भविष्य की भूमिका

चित्र 2 को शहरी आवास विकास में डिजिटल ट्विन्स के भविष्य से जोड़ा जा सकता है, जहां वास्तुकला और उत्पाद विकास की प्रक्रिया का क्रमिक और चरणबद्ध विवरण दिखाया गया है। डिजिटल ट्विन्स

के उपयोग से शहरी आवास परियोजनाओं में सटीकता और दक्षता बढ़ाई जा सकती है। इसमें आर्किटेक्चर ब्लूप्रिंट से लेकर प्रोडक्ट कैटलॉग मोनेटाइजेशन तक की सभी प्रक्रियाएं डिजिटल तरीके से प्रबंधित और मॉनिटर की जा सकती हैं। कोर सेवाओं से जुड़ना, विस्तृत डिजाइन बनाना और लगातार ओ एंड एम (ऑपरेशन और मेंटेनेंस) के साथ सुधार सुनिश्चित करना, शहरी आवास की योजना और कार्यान्वयन में क्रांति ला सकता है। डिजिटल ट्विन्स इस प्रक्रिया को और अधिक कुशल, पारदर्शी और लाभप्रद बनाने में मदद कर सकते हैं, जिससे भविष्य के शहरी आवास प्रोजेक्ट्स अधिक टिकाऊ और उपयोगकर्ता–अनुकूल हो सकें।

निष्कर्ष

डिजिटल ट्विन प्रौद्योगिकी शहरी आवास विकास के भविष्य को आकार दे रही है, जो अधिक स्मार्ट, कुशल, और टिकाऊ शहरी समुदायों के निर्माण के लिए एक नई राह खोल रही है। हालाँकि इसे अपनाने की दिशा में चुनौतियाँ मौजूद हैं, लेकिन इसके संभावित लाभ अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। बेहतर डिजाइन, संचालन, और रहने की गुणवत्ता के माध्यम से, डिजिटल ट्विन्स एक ऐसे शहरी भविष्य का वादा करते हैं जो पर्यावरण के अनुकूल और तकनीकी रूप से उन्नत है। जैसे–जैसे शहरीकरण बढ़ रहा है, शहरी आवास में डिजिटल ट्विन प्रौद्योगिकी का एकीकरण केवल एक तकनीकी प्रवृत्ति नहीं है, बल्कि यह शहरों के सतत विकास की ओर एक आवश्यक कदम है।

अफ्रीका में बेघरी से संघर्ष

– जयदीप,
सहायक प्रबंधक

अफ्रीका महाद्वीप में बेघरी एक गंभीर सामाजिक और आर्थिक समस्या है, जो तेजी से बढ़ते शहरीकरण, युद्धों, प्राकृतिक आपदाओं, और गरीबी के कारण विकराल रूप ले चुकी है। बेघरी न केवल शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालती है, बल्कि यह सामाजिक असमानता, शिक्षा की कमी और सुरक्षा के खतरे को भी बढ़ाती है। इस लेख में हम अफ्रीका के कुछ देशों में बेघरी से निपटने के लिए किए गए प्रयासों का विश्लेषण करेंगे, और इन प्रयासों के प्रभाव और चुनौतियों पर चर्चा करेंगे।

1. केन्याः किफायती आवास परियोजना

केन्या में बेघरी की समस्या विशेष रूप से किपिसा और नैरोबी जैसे बड़े शहरों में अधिक है। यहाँ शहरीकरण की गति तेज है, लेकिन किफायती आवास की कमी है। कई लोग झुग्गियों और अस्थायी शेल्टरों में रहते हैं, जहाँ उनकी बुनियादी सुविधाएँ और सुरक्षा पर संकट रहता है।

उपायः

केन्या सरकार ने "किफायती आवास परियोजना" शुरू की है, जो 2030 तक एक मिलियन नए घर बनाने का लक्ष्य रखती है। इस परियोजना में सरकार ने निजी क्षेत्र को भी शामिल किया है, ताकि आवास निर्माण को तेजी से और कम लागत में किया जा सके।

प्रभावः

इस परियोजना ने शहरी बेघरी को कम करने के लिए एक प्रभावी रास्ता दिखाया है। इन घरों में सस्ती कीमत पर सुरक्षित आवास मिलते हैं, और साथ ही बुनियादी सुविधाएँ जैसे पानी, बिजली, और सड़कें भी उपलब्ध होती हैं। इस योजना से ना केवल बेघर लोगों को स्थायी आवास मिल रहा है, बल्कि यह आर्थिक विकास और शहरीकरण में भी सहायक सिद्ध हो रही है।

चुनौतियाँः

हालाँकि इस योजना ने सकारात्मक प्रभाव डाला है, फिर भी यह परियोजना सभी गरीबों तक पहुंचने में असफल रही है। किफायती आवास की मांग बहुत अधिक है, और संसाधनों की कमी के कारण इसे सभी जरूरतमंदों तक पहुँचाना मुश्किल हो रहा है। इसके अलावा, किफायती आवास की कीमत भी कुछ स्थानों पर ज्यादा हो सकती है, जो कि गरीब परिवारों के लिए इसे सुलभ नहीं बनाती।

2. दक्षिण अफ्रीकाः "स्मार्ट सिटी" पहल

दक्षिण अफ्रीका में बेघरी और गरीबी की समस्या विशेष रूप से जोहान्सबर्ग, केप टाउन और डरबन जैसे महानगरों में गंभीर है। यहाँ तक कि दक्षिण अफ्रीका में झुग्गियाँ और अस्थायी आवास बड़े पैमाने पर मौजूद हैं।

उपायः

दक्षिण अफ्रीका सरकार ने "स्मार्ट सिटी" पहल की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य ऐसे आधुनिक, सस्ते और टिकाऊ आवास निर्माण करना है, जो न केवल बेघरों के लिए आवास उपलब्ध कराएं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक समावेशन भी सुनिश्चित करें। स्मार्ट सिटी परियोजनाओं में ऊर्जा दक्षता, जल पुनर्चक्रण, और सौर ऊर्जा जैसे पर्यावरणीय उपायों को प्राथमिकता दी जा रही है।

इसके अलावा, "बेसिक इनकम ग्रांट" कार्यक्रम को भी लागू किया गया है, जिसमें गरीब और बेरोजगार नागरिकों को मासिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, जिससे उनकी जीवनशैली में सुधार हो सके और वे बेघरी से बाहर निकल सकें।

प्रभावः

स्मार्ट सिटी पहल से कई नागरिकों को सस्ते और सुरक्षित आवास मिले हैं। इस परियोजना के माध्यम से बुनियादी ढांचे में सुधार हुआ है और पर्यावरणीय अनुकूल आवास विकल्प प्रस्तुत किए गए हैं।

इसके अलावा, बेसिक इनकम ग्रांट ने गरीबों के लिए आर्थिक सहायता सुनिश्चित की है, जिससे उनकी जीवन स्थितियाँ बेहतर हो सकी हैं।

चुनौतियाँ:

हालाँकि इन पहलों ने सकारात्मक बदलाव दिखाया है, फिर भी यह परियोजनाएँ सभी बेघरों तक पहुँचने में पूरी तरह सफल नहीं हो पाई हैं। स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट्स में निवेश बहुत अधिक है और संसाधनों की कमी के कारण यह बड़े पैमाने पर नहीं लागू किया जा सकता। इसके अलावा, गरीब समुदायों के लिए इन स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट्स की कीमत भी एक बड़ी चुनौती है, जो किफायती नहीं हो सकती।

3. नाइजीरिया: "नेशनल हाउसिंग पॉलिसी"

नाइजीरिया में बेघरी की समस्या एक गंभीर संकट बन चुकी है। वहाँ शहरी क्षेत्रों में बड़ी संख्या में बेघर लोग सड़कों पर और अस्थायी शेल्टर में रहते हैं। नाइजीरिया की सरकार ने इस समस्या को हल करने के लिए "नेशनल हाउसिंग पॉलिसी" लागू की है, जो किफायती आवास निर्माण को बढ़ावा देती है।

उपाय:

नाइजीरिया सरकार ने इस नीति के तहत सरकारी भूमि पर आवास निर्माण के लिए परियोजनाएँ शुरू की हैं, जहाँ गरीब लोगों को किफायती और सुरक्षित आवास प्रदान किए जाते हैं। इन परियोजनाओं में विशेष ध्यान दिया जाता है कि पर्यावरणीय स्थिरता, ऊर्जा दक्षता, और सामाजिक समावेशन सुनिश्चित किया जाए।

प्रभाव:

इस नीति के तहत कुछ सफलता भी मिली है, जहाँ बेघर लोगों को स्थायी आवास मिल पाया है। साथ ही, सरकार ने कई शहरों में बुनियादी ढांचे को सुधारने और गरीबों के लिए किफायती आवास विकल्प देने के प्रयास किए हैं।

चुनौतियाँ:

हालाँकि यह नीति अच्छी शुरुआत है, लेकिन यह सभी गरीब और बेघरों तक नहीं पहुँच पाई है। नाइजीरिया में राजनीतिक अस्थिरता, वित्तीय संकट, और प्रशासनिक चुनौतियाँ इसके प्रभावी कार्यान्वयन में बाधक बन रही हैं। इसके अतिरिक्त, किफायती आवास की योजना में उच्च लागत और पर्याप्त संसाधनों की कमी भी एक बड़ा मुद्दा है।

4. घाना: किफायती आवास की पहल

घाना, जो पश्चिमी अफ्रीका का एक प्रमुख देश है, पिछले कुछ दशकों से शहरीकरण और जनसंख्या वृद्धि के मुद्दों का सामना कर रहा है। देश में बढ़ती शहरी जनसंख्या, उच्च आवास की मांग, और किफायती आवास की कमी ने गंभीर सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ उत्पन्न की हैं। इन समस्याओं को हल करने के लिए घाना सरकार और निजी क्षेत्र ने विभिन्न पहलें की हैं, जो किफायती आवास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण हैं। घाना की राजधानी अकरा और अन्य बड़े शहरों में शहरीकरण की दर अत्यधिक तेजी से बढ़ी है। 1950 में घाना की कुल जनसंख्या लगभग 6 मिलियन थी, जो 2020 तक बढ़कर लगभग 31 मिलियन हो गई। शहरी इलाकों में जनसंख्या वृद्धि का अनुपात गांवों से कहीं अधिक है। अकरा में अकेले 2021 तक 5 मिलियन से अधिक लोग रहते थे। इस बढ़ती जनसंख्या के कारण आवास की भारी कमी हो गई है, और यह मुख्य रूप से निम्न और मध्यम आय वर्ग के लोगों के लिए किफायती आवास की उपलब्धता से जुड़ी समस्याओं की ओर इशारा करता है। घाना में किफायती आवास की गंभीर कमी का मुख्य कारण निम्नलिखित हैं:

1. **भूमि की कमी:** शहरी क्षेत्रों में भूमि की कीमतों में अत्यधिक वृद्धि हुई है, जिससे किफायती आवास के निर्माण में मुश्किलें आती हैं।
2. **निर्माण लागत में वृद्धि:** उच्च निर्माण सामग्री की कीमतें और श्रम लागत ने किफायती आवास निर्माण की लागत को बढ़ा दिया है।
3. **वित्तीय समर्थन की कमी:** अधिकतर घानाई लोग आवास ऋण लेने के लिए वित्तीय संसाधनों का अभाव महसूस करते हैं, क्योंकि ब्याज दरें ऊंची हैं और बैंक ऋण प्रक्रिया जटिल है।

उपाय:

घाना सरकार ने किफायती आवास की समस्या से निपटने के लिए कई योजनाएँ और परियोजनाएँ शुरू की हैं। इनमें से कुछ प्रमुख योजनाएँ निम्नलिखित हैं:

1. **घाना हाउसिंग पॉलिसी और कार्यक्रमः** सरकार ने 2016 में एक नए आवास कार्यक्रम की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य शहरी क्षेत्रों में 200,000 से अधिक किफायती घरों का निर्माण करना था। इस योजना में सरकार ने निजी क्षेत्र को शामिल किया और भूमि हस्तांतरण प्रक्रिया को सरल बनाया।

2. **प्राइवेट पब्लिक पार्टनरशिपः** सरकार ने निजी क्षेत्र को भी किफायती आवास निर्माण में शामिल करने के लिए सार्वजनिक–निजी भागीदारी मॉडल को बढ़ावा दिया। इसके तहत विभिन्न निजी निर्माण कंपनियों के साथ साझेदारी की गई, जिससे निर्माण लागत कम हो और आवासों की कीमत भी किफायती रहे। निजी कंपनियाँ सरकार को भूमि उपलब्ध कराती हैं, जबकि सरकार निर्माण लागत को सहन करती है।

3. **घाना रियल एस्टेट डेवलपमेंटः** घाना सरकार ने रियल एस्टेट विकास के लिए कार्यक्रम की शुरुआत की, जिसमें किफायती आवास के निर्माण के लिए विशेष कदम उठाए गए। इस योजना के तहत, सरकार ने विशेष निर्माण तकनीकों को बढ़ावा दिया, जिससे निर्माण की लागत को कम किया जा सके।

घाना में किफायती आवास के क्षेत्र में निजी कंपनियाँ भी सक्रिय रूप से शामिल हैं। कई रियल एस्टेट कंपनियाँ किफायती आवास परियोजनाओं के निर्माण में लगी हैं। इन कंपनियों ने कम लागत में आवास निर्माण के लिए वैकल्पिक निर्माण तकनीकों का उपयोग किया है, जैसेः

1. **मॉड्यूलर हाउसिंगः** कुछ कंपनियाँ मॉड्यूलर हाउसिंग का उपयोग कर रही हैं, जिसमें किफायती निर्माण सामग्री और प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाता है। इस तकनीक से निर्माण समय को भी कम किया जाता है और लागत को घटाया जा सकता है।

2. **पार्टनरशिप मॉडलः** कुछ निजी कंपनियाँ सरकार के साथ मिलकर किफायती आवास परियोजनाओं का निर्माण कर रही हैं। इन साझेदारियों में निजी कंपनियाँ निर्माण और निवेश की जिम्मेदारी लेती हैं, जबकि सरकार आवश्यक भूमि और अन्य संसाधन प्रदान करती है।

चुनौतियाँः

घाना में किफायती आवास की दिशा में कई प्रमुख चुनौतियाँ सामने आई हैंः

1. **भूमि की कीमतेंः** शहरी क्षेत्रों में भूमि की कीमतों में लगातार वृद्धि हो रही है, जिससे किफायती आवास निर्माण में समस्या उत्पन्न हो रही है। इसके अलावा, किफायती भूमि के लिए सरकारी नीति में सुधार की आवश्यकता है।

2. **वित्तीय बाधाएँः** किफायती आवास परियोजनाओं के लिए आवश्यक पूंजी जुटाना कठिन है। उच्च ब्याज दरें और ऋण प्रक्रिया की जटिलता ने आम आदमी के लिए घर खरीदने को कठिन बना दिया है।

3. **निर्माण सामग्री की कमी और लागतः** कुछ निर्माण सामग्रियाँ घाना में महंगी होती हैं, और इनकी आपूर्ति सीमित है। इसके परिणामस्वरूप किफायती आवास निर्माण की लागत बढ़ जाती है।

4. **नियम और प्रशासनिक जटिलताएँः** किफायती आवास योजनाओं में कानूनी और प्रशासनिक जटिलताएँ भी एक प्रमुख समस्या हैं। भूमि अधिग्रहण, निर्माण अनुमतियाँ और अन्य कानूनी प्रक्रियाएँ कभी–कभी धीमी और जटिल हो जाती हैं।

निष्कर्ष

अफ्रीका में बेघरी से निपटने के लिए कई देशों ने विभिन्न उपायों को अपनाया है, लेकिन इन प्रयासों को सफल बनाने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है। किफायती आवास, स्मार्ट सिटी पहल, और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं जैसी पहलों ने कुछ हद तक सकारात्मक बदलाव दिखाया है, लेकिन चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। इन योजनाओं के सफल क्रियान्वयन के लिए सरकारी, निजी और गैर–सरकारी संगठनों को मिलकर काम करने की आवश्यकता है। बेघरी और गरीबी से संघर्ष में सतत प्रयास और प्रभावी नीतियाँ ही समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकती हैं।

सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि

– रिया केसरकर,
सेण्ट बैंक होम फाइनेंस लिमिटेड
प्रथम पुरस्कार, निबंध प्रतियोगिता

एक व्यापक दृष्टिकोण – सत्यनिष्ठा क्या है और यह राष्ट्र को कैसे प्रभावित कर रही है?

मूल बातों पर लौटें तो, सत्यनिष्ठा का तात्पर्य ईमानदारी और मजबूत नैतिक सिद्धांतों से है। इसमें नैतिक मानकों का पालन करना शामिल है, तब भी जब कोई देख नहीं रहा हो। सरल शब्दों में कहें तो यह चरित्र और कार्यों में सम्पूर्णता और स्थिरता है।

राष्ट्र के संदर्भ में देखा जाए तो यह व्यक्तिगत व्यवहार से आगे बढ़कर संस्थागत प्रथाओं, शासन की संरचना और सामाजिक मानदंडों में बदल जाता है। सत्यनिष्ठा की 'संस्कृति' से तात्पर्य नैतिक आचरण, कार्यों में पारदर्शिता और समाज के सभी स्तरों पर जवाबदेही के प्रति सामूहिक प्रतिबद्धता से है।

जैसे–जैसे भारत वैश्विक आर्थिक गुरू बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, यह सत्यनिष्ठा का वह छोटा सा भाग है, जो विश्वास का प्रतिरूप बनता है और प्रगति तथा सतत विकास का जटिल संबंध निर्मित करता है, जिससे राष्ट्रीय समृद्धि की आधारशिला तैयार होती है।

निरन्तर प्रभाव – व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा से राष्ट्रीय समृद्धि की ओर

सत्यनिष्ठा की संस्कृति रातों–रात विकसित होने वाली चीज नहीं है और निश्चित रूप से यह किसी एक क्षेत्र की जिम्मेदारी नहीं है। इसका जन्म व्यक्तिगत प्रतिबद्धता से होता है और यहीं से परिवारों, समुदायों, संगठनों और फिर अंततः पूरे राष्ट्र पर इसका प्रभाव पड़ता है। आइए भारतीय संदर्भ में सत्यनिष्ठा के कुछ अलग–अलग पहलुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास करें:

1. शासन और सार्वजनिक संस्थाओं में सत्यनिष्ठा:

सत्यनिष्ठा की संस्कृति यह सुनिश्चित करती है कि लोक सेवक बिना किसी व्यक्तिगत या सामूहिक पूर्वाग्रह के नैतिकता, जवाबदेही और सार्वजनिक सेवा के माध्यम से जनता की सेवा के मूल्यों और लोकाचार द्वारा शासित हों। इस प्रकार की नेतृत्व सत्यनिष्ठा दूसरों के लिए भी वैसा ही बनने का आधार बनती है।

उदाहरण के लिए:

- हमारी सरकार ने डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया और स्वच्छ भारत अभियान जैसी पहलों को प्रस्तुत करके शासन प्रणाली में सुधार लाने में काफी काम किया है। हमारी शासन व्यवस्था में सत्यनिष्ठा के बिना, ये सभी पहल वास्तविक नीतियां होने के बजाय सिर्फ एक नारा मात्र मानी जातीं।
- भारत में हर वर्ष मनाया जाने वाला सतर्कता जागरूकता सप्ताह सार्वजनिक संस्थाओं में सत्यनिष्ठा और भ्रष्टाचार के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देता है। यह आयोजन लोगों को यह याद दिलाता है कि सतर्कता केवल कानून लागू करने वाली एजेंसियों का कर्तव्य ही नहीं है, अपितु प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है।

सरकार के साथ सतर्क नागरिक, समाज को अधिक समृद्ध और न्यायपूर्ण बनाने के लिए सत्यनिष्ठा के विकास के लिए एक उत्कृष्ट भूमि तैयार करते हैं।

2. कॉर्पोरेट सत्यनिष्ठा तथा वित्तीय संस्थानों में सत्यनिष्ठा

आर्थिक विकास के साथ–साथ व्यवसायों की स्थिरता काफी हद तक कॉर्पोरेट द्वारा सत्यनिष्ठा की संस्कृति को बनाए रखने पर निर्भर करती है। ऐसी सत्यनिष्ठा के बिना, यह वित्तीय संकट और निवेशकों के विश्वास की हानि, आर्थिक अस्थिरता की ओर ले जाता है। वित्तीय क्षेत्रों की ओर से सत्यनिष्ठा की कमी के कारण किसी देश की अर्थव्यवस्था पर कहर बरपाने का एक शानदार उदाहरण 2008 का वित्तीय संकट है। इस संकट के कारण बेईमानी से ऋण देने की प्रथाएँ, अस्पष्ट वित्तीय उत्पाद और कॉर्पोरेट लालच ने व्यापक आर्थिक पतन ला दिया, जिससे लाखों लोगों का जीवन प्रभावित हुआ।

किसी भी समृद्ध अर्थव्यवस्था के लिए एक मजबूत वित्तीय प्रणाली की आवश्यकता होती है, और विश्वास ही इस प्रणाली का मूल है। बैंकिंग क्षेत्र में कार्यरत बैंकरों के लिए सत्यनिष्ठा जीवन जीने का एक तरीका

होना चाहिए। सत्यनिष्ठा के कई उदाहरण हैं, सकारात्मक और नकारात्मक दोनों, जैसेः

- **पंजाब नेशनल बैंक व्हिसल ब्लोअर**

2018 में, पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) के एक युवा अधिकारी ने हीरा व्यापारी नीरव मोदी के लेनदेन में विसंगतियों का पता लगाया। हालांकि, उच्च पदस्थ अधिकारियों द्वारा दबाव डाले जाने के बावजूद, अधिकारी ने मामले को उच्च अधिकारियों के संज्ञान में लाया। सत्यनिष्ठा के इस कार्य के कारण भारत के सबसे बड़े बैंकिंग धोखाधड़ी में से एक का पता चला, जिसका अनुमानित मूल्य लगभग 2 बिलियन डॉलर है। व्हिसल ब्लोअर द्वारा इस मामले को उजागर करने का साहस यह साबित करता है कि व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा ही बैंकिंग प्रणाली को स्वस्थ रखने में मदद करेगी।

दूसरी ओर, जो लोग सत्यनिष्ठा का पालन नहीं करते उनके लिए कुछ चुनौतियाँ और सबक हैं। ऐसी कुछ चुनौतियाँ इस प्रकार हैं;

- **यस बैंक संकट**

वर्ष 2020 में यस बैंक को कथित कुप्रबंधन और कॉर्पोरेट प्रशासन में खामियों के कारण बड़े संकट का सामना करना पड़ा। बैंक के संस्थापक को मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। यह एक ऐसा मामला था जिसने दर्शाया कि बैंक के प्रबंधन के शीर्ष स्तर से सत्यनिष्ठा कैसे आरंभ होनी चाहिए और यदि ऐसा नहीं हुआ तो क्या हो सकता है।

- **पंजाब और महाराष्ट्र सहकारी बैंक घोटाला**

2019 में, यह भी बताया गया कि पंजाब और महाराष्ट्र सहकारी (पीएमसी) बैंक ने एक ही रियल एस्टेट फर्म को दिए गए अशोध्य ऋणों को छिपाने के लिए 21,000 से अधिक फर्जी खाते जोड़े थे। धोखाधड़ी लंबे समय तक बिना पता चले चलती रही, जो इसके आंतरिक नियंत्रण और लेखा परीक्षा प्रक्रिया में खामियों को दर्शाता है। इसलिए, एक प्रभावी प्रणाली स्थापित की जानी चाहिए ताकि बैंकिंग परिचालन में सत्यनिष्ठा लाई जा सके।

सत्यनिष्ठा के प्रति प्रतिबद्धता न केवल कंपनी के विधि अनुपालन को सुनिश्चित करती है, बल्कि हितधारकों के बीच विश्वास को भी बढ़ाती है। जब इसे अनेक संगठनों और संस्थाओं में कार्यरत हजारों कर्मचारियों से गुणा किया जाता है, तो वह व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा, क्षेत्र–व्यापी सांस्कृतिक जवाबदेही में परिवर्तित हो जाती है।

3. कर्मचारी निष्ठा और सामाजिक कल्याण

सूक्ष्म स्तर पर, व्यक्तिगत व्यवहार भी सत्यनिष्ठा की संस्कृति निर्मित करने में बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, जो कर्मचारी सत्यनिष्ठा रखते हैं, अपने काम के प्रति जिम्मेदारी लेते हैं, तथा अपना काम करने के लिए प्रयास करते हैं, वे किसी भी संगठन में अपूरणीय संपत्ति होते हैं। इसके अतिरिक्त, जब कर्मचारी और प्रबंधक सत्यनिष्ठा के साथ काम करते हैं, तो वे नैतिक व्यावसायिक प्रथाओं के प्रति प्रतिबद्ध होते हैं, जिससे घोटालों, कानूनी परिणामों या मौद्रिक घाटे की संभावना भी कम हो जाती है, जो संगठनात्मक प्रगति को नुकसान पहुंचा सकते हैं और अंततः व्यापक अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचा सकते हैं। केंद्रीय सतर्कता आयोग ने नियम एवं विनियम विकसित किए हैं जिन्हें सरकार उचित और नैतिक व्यवहार को बढ़ावा देने के लिए लागू करती हैय वे काम में सत्यनिष्ठा पर प्रकाश डालते हैं। सतर्कता और सत्यनिष्ठा से यह सुनिश्चित होता है कि सत्ता में बैठा कोई भी व्यक्ति अपने अधिकार का दुरुपयोग न कर सके।

4. सामाजिक समानता के उत्प्रेरक के रूप में सत्यनिष्ठा

शासन और अर्थशास्त्र के अलावा, सामाजिक समानता के लिए सत्यनिष्ठा महत्वपूर्ण है। भारत जैसे देश के लिए संसाधनों तक असमान पहुंच, आय असमानता और सार्वजनिक सेवाओं में भ्रष्टाचार

की समस्याओं को हल करने के लिए अत्यधिक सत्यनिष्ठा की आवश्यकता है।

सत्यनिष्ठा किस प्रकार सामाजिक समानता को बेहतर बनाने में सहायक हो सकती है, इसका एक व्यावहारिक उदाहरण डीबीटी (प्रत्यक्ष लाभ अंतरण) जैसी योजनाओं के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता है, जिसमें लक्षित लाभार्थियों के लिए बिचौलियों के बिना सब्सिडी वितरित करने का वादा किया गया है। भ्रष्टाचार के अवसरों को समाप्त करने से ये योजनाएं न्यायपूर्ण और समावेशी समाज बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बन जाती हैं, जहां विकास का लाभ सभी नागरिकों को मिलता है।

चुनौतियाँ और भावी परिदृश्य

सत्यनिष्ठा की संस्कृति बनाना आसान नहीं है। इस तरह के संरचनात्मक मुद्दों को लंबे समय तक चलने वाले अभ्यासों, बदलाव के प्रति प्रतिरोध और अल्पकालिक लाभ के उद्देश्यों से रोका जा सकता है। हालांकि भावी परिदृश्य स्पष्ट है:

1. एक मजबूत विनियामक प्रणाली – खंडों में निरंतर सुधार एवं प्रवर्तन की आवश्यकता होगी।
2. सत्यनिष्ठा के लिए पुरस्कार – संस्था के लिए पुरस्कार–आधारित नैतिक व्यवहार पर आधारित पुरस्कार प्रणाली की स्थापना।
3. व्हिसल ब्लोअर की सुरक्षा – अनैतिक व्यवहार को उजागर करने वाले व्हिसल ब्लोअर की सुरक्षा के लिए प्रभावी प्रणाली का उपयोग करना।
4. समन्वय – सत्यनिष्ठा को सर्वव्यापी बनाने की दिशा में सरकारी एजेंसियों, बैंकों और नागरिक समाज की पहल को प्रोत्साहित किया जाएगा।
5. दीर्घकालिक दृष्टिकोण – संगठनों और संस्थाओं को तत्काल लाभ पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय स्थिरता की ओर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित करें।

निष्कर्ष: सत्यनिष्ठा समृद्ध भारत का आधार है

विशेष रूप से आवास वित्त क्षेत्र के लिए, सत्यनिष्ठा वह अदृश्य शक्ति है जो ईंटों और गारे को आवासों में बदल देती है, ऋणों को पूरे हुए सपनों में बदल देती है, तथा वित्तीय लेन–देन को विश्वास के बंधन में बदल देती है।

जबकि हम भारत की आर्थिक यात्रा में एक नए युग के शिखर पर खड़े हैं, सत्यनिष्ठा की संस्कृति की स्थापना से अधिक महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है।

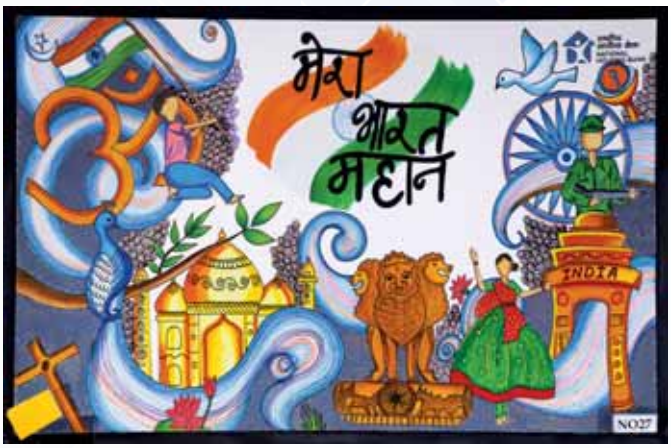

यद्यपि ऐसी संस्कृति का निर्माण कोई घटना नहीं बल्कि एक प्रक्रिया है जो दैनिक आधार पर सामने आती है, फिर भी इसमें प्रत्येक हितधारक की ओर से प्रतिबद्धता और दृढ़ता की आवश्यकता है – भागीदारी के निम्नतम स्तर पर सहायक कर्मचारियों से लेकर शासन के उच्चतम स्तर तक। जब हम इस संस्कृति को अपनाते हैं, तो हम न केवल अपने भविष्य को आर्थिक रूप से सुरक्षित करते हैं, बल्कि उन मूल्यों के सिद्धांतों को भी बनाए रखते हैं जिनके द्वारा हम स्वयं को एक राष्ट्र के रूप में परिभाषित करते हैं। सत्यनिष्ठा की संस्कृति नैतिक विकल्प नहीं, बल्कि वह मिट्टी है जिसमें नवाचार, विकास और समृद्धि के बीज जीवन पाते हैं और खिलते हैं।

इस संस्कृति को पोषित करते हुए हम एक आर्थिक रूप से मजबूत तथा नैतिक रूप से सुदृढ़ देश का मार्ग प्रशस्त करते हैं। मुझे वास्तव में लगता है कि सभी भारतीयों को ऐसे उच्च मानक और सर्वोच्च सत्यनिष्ठा स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए ताकि जल्द ही भारत को एक ऐसे राष्ट्र के रूप में देखा जाए जो अपने मूल्यों की कीमत पर नहीं बल्कि अपने मूल्यों के कारण समृद्ध होता है।

सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि

– सूर्य प्रताप राव रेपल्ली,
सेण्ट बैंक होम फाइनेंस लिमिटेड
द्वितीय पुरस्कार, निबंध प्रतियोगिता

सत्यनिष्ठा की संस्कृति और राष्ट्र की समृद्धि यह विषय अपने आप में समृद्ध, सुसंस्कृत भारत का सजीव चित्रण कर रहा है। नैतिक, वैज्ञानिक, धार्मिक, आर्थिक, आध्यात्मिक, शिक्षा के संस्कार से समृद्ध, आचार–व्यवहार से समृद्ध राष्ट्र के लिए भारत से श्रेष्ठ कोई अन्य उदाहरण हो सकता है क्या?

सम्राट विक्रमादित्य की राष्ट्र के प्रति सत्यनिष्ठा ही कि यह राष्ट्र सोने की चिड़िया के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह धन की समृद्धि को दर्शाता है। रघुवंशी राम, राजा राम बनकर सत्य के साथ राष्ट्र धर्म का पालन किया और राम राज्य को सर्वश्रेष्ठ राज के प्रतीक के रूप में स्थापित कर गए।

सत्य के मार्ग पर चलना और कर्तव्यों का निर्वहन करना किसी भी राज्य के राजा, देश के प्रधानों के साथ ही उस राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का परम कर्तव्य है। सबके सत्यनिष्ठा के भाव से राष्ट्र में नैतिकता का बोलबाला होता है। कदाचार, भ्रष्टाचार में न्यूनता आती है और राष्ट्र के जन–जन में संपूर्ण भाव से राष्ट्र के प्रति महान भाव, राष्ट्र की उन्नति की महान और पवित्र भावना का संचार होता है।

सत्यनिष्ठा की संस्कृति का अर्थ है उस समाज या राष्ट्र की वह मानसिकता जहाँ पर लोग सत्य और ईमानदारी को अपने जीवन में आचरण का एक केंद्र बनाते हैं।

सत्यनिष्ठा का वास्तविक अर्थ होता है "सत्य के प्रति निष्ठावान होना" एवं अपने कर्तव्यों को पूर्ण निष्ठा और ईमानदारी से निभाना। देखा जाए तो यह एक ऐसा गुण है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व को अंदर से मजबूती प्रदान करता है और उसे समाज में आदर्श व्यक्ति बनाता है। जब सत्यनिष्ठा व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से उभरकर आती है और समाज का एक हिस्सा जब बनती है, तब वह राष्ट्र की प्रगति और समृद्धि का आधार बनती है। सत्यनिष्ठा की संस्कृति न केवल किसी भी व्यक्ति के जीवन में सुधार लाती है, साथ ही साथ राष्ट्र के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

जब भी किसी समाज के प्रत्येक सदस्य सत्यनिष्ठा से प्रेरित होते हैं, उसे अपने जीवन में अमल में लाते हैं तो उस समाज में अन्याय, भ्रष्टाचार और अपराध होने की गुंजाइश नहीं के बराबर रह जाती है, या फिर कम हो जाती हैं। क्योंकि यह लोगों को उनके दायित्वों के प्रति जागरूक बनाती है जिससे सत्यनिष्ठ व्यक्ति अपने काम को निष्ठा से करता है, अपने कर्तव्यों का पालन ईमानदारी से करता है, और समाज में एक आदर्श स्थापित करता है।

किसी भी राष्ट्र की समृद्धि और विकास में सत्यनिष्ठा का योगदान का आंकलन केवल उस राष्ट्र की आर्थिक विकास से आंकलन नहीं किया जा सकता है अपितु, यह उस राष्ट्र के नैतिकता, सामाजिक न्याय, पारदर्शिता, और लोगों के जीवन की गुणवत्ता पर भी निर्भर करती है।

सिर्फ हमारे भारत देश में ही नहीं, अपितु विश्व में ऐसे कई उदाहरण प्रस्तुत हुए जहां उन देशों में सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि हुई और वो देश आगे बढ़कर एक मिसाल बन गए।

हमारे भारत देश में भी कई ऐसे व्यक्ति या महापुरुषों ने अपने जीवन में सत्यनिष्ठा और नैतिक मूल्यों पर विशेषकर ध्यान दिए और अपने जीवन में उसे बखूबी अपनाया भी, जिसके कारण वो इस देश में सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया और देश के महानायक बने।

हमारे देश में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जो अपना सम्पूर्ण जीवन देश के समृद्धि के लिए न्यौछावर कर दिए हैं। महात्मा गांधी जो कि सत्य और अहिंसा के सबसे बड़े प्रतीक माने जाते हैं और भारत की आजादी की लड़ाई में महात्मा गांधी के द्वारा सत्याग्रह "सत्य पर आग्रह" को अपनाया गया और उनका मानना था कि व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा ही समाज के नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान के लिए आवश्यक है जिसके चलते गांधी जी के नेतृत्व में हुए दांडी मार्च और "भारत छोड़ो" आंदोलन सत्य और नैतिकता पर आधारित थे।

सत्यनिष्ठा और नैतिकता के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के साथ

साथ कई और भी महानुभाव भी हुए जैसे के डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, लाल बहादुर शास्त्री, सरदार वल्लभ भाई पटेल, डा. भीमराव अंबेडकर, जिनके जीवन में विनम्रता, ईमानदारी, और मेहनत के साथ साथ नैतिक नेतृत्व रही और उन्होंने हमेशा से ही पारदर्शिता, सत्यनिष्ठा, और अथक परिश्रम से व कड़ी मेहनत पर जोर दिया और देश के युवाओं को नैतिकता और ईमानदारी के मूल्यों को अपनाने के लिए पेरित किए और वे सबके दिलों में एक अपनी अमिट छाप छोड़ गए।

अपने कर्त्तव्य, अपनी जन्मभूमि, अपने राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा के लिए समर्पित, संकल्पित सैनिक अपनी मातृभूमि को शस्य श्यामल खेतों–खलिहानों का उपहार देने वाले कृषक, अपने देश को निष्ठावान छात्र समूह, ज्ञान, कौशल आत्मविश्वास से ओत–प्रोत युवा शक्ति से समृद्ध करने को संकल्पित गुरू, शिक्षक, शिक्षाकेंद्र राष्ट्र भक्ति को सर्वोपरि रखने की सत्यपरायणता से कर्मरत होते है तो उस राष्ट्र का आत्मविश्वास, स्वाभिमान, गौरव निरंतर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होता रहता है। ऐसे राष्ट्र की एकता अखंडता, अदम्य साहस के आगे सबको नतमस्तक होना पड़ता है। सत्य के मार्ग का अनुसरण करने वाले देश, समाज व्यक्ति में निडरता का भाव होता है। सत्यनिष्ठा के उच्च भाव से पोषित व्यक्ति, समाज देश की गौरवशाली संस्कृति का पोषक होता है।

1. आर्थिक समृद्धि का आधार सत्यनिष्ठा

किसी भी राष्ट्र में व्यवसाय और अर्थव्यवस्था का विकास सत्यनिष्ठा पर ही निर्भर करता है। जब लोग ईमानदारी से अपने व्यवसाय का संचालन करते हैं, तो वे विश्वास का प्रतीक बन जाते है। उत्त राष्ट्र की अर्थव्यवस्था मजबूत होती है। सत्यनिष्ठा के अभाव की दशा में घोटालों, धोखाधड़ी और आर्थिक अनियमितताओं का खतरा बढ़ जाता है, जो किसी भी राष्ट्र की समृद्धि को प्रभावित करता है।

2. सत्यनिष्ठा का न्यायपूर्ण समाज के निर्माण में योगदान

सत्यनिष्ठा की संस्कृति ही न्यायपूर्ण समाज की नींव रखती है। जहां सत्य और ईमानदारी का अपना महत्व होता है, वहां पर न्यायपालिका, प्रशासनिक तंत्र, और अन्य सरकारी तंत्रों में पारदर्शिता और निष्पक्षता भी होती है। जिसके कारण समाज के हर व्यक्ति को न्याय मिलता है और सामाजिक समरसता भी बनी रहती है।

3. सत्यनिष्ठा एक विश्वास एवम् पारदर्शिता का विकास एवं आधार बिंदु

सत्यनिष्ठा से समाज में विश्वास और पारदर्शिता को बढ़ावा मिलता है जिससे लोग एक–दूसरे पर भरोसा बढ़ने के साथ साथ व्यापार, सरकार, और अन्य क्षेत्रों में सहयोग और समझदारी भी बढ़ती है। समाज में जब एक–दूसरे के प्रति विश्वास पनपता है तभी देश में आर्थिक और सामाजिक विकास भी तीव्र गति से होता है।

4. सत्यनिष्ठा एक लगाम, भ्रष्टाचार पर रोकथाम

जब समाज में लोग ईमानदारी और सत्य के प्रति प्रतिबद्ध होते हैं, तो भ्रष्टाचार की संभावना कम हो जाती है। भ्रष्टाचार न केवल सामाजिक और नैतिक क्षति करता है, बल्कि यह आर्थिक विकास में भी बाधा डालता है।

5. सत्यनिष्ठा का शिक्षा में योगदान

शिक्षा केवल पुस्तक से प्राप्त करने का आधार नहीं है, और न शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का संचार करना है, बल्कि छात्रों को नैतिकता, ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के मूल्यों से भी अवगत कराना है। शिक्षा के द्वारा यदि सत्यनिष्ठा की संस्कृति का विकास किया जाए, तो यह आने वाली पीढ़ियाँ न केवल नैतिक रूप से सशक्त होंगी, बल्कि वे राष्ट्र के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में अपना उल्लेखनीय योगदान कर सकते हैं।

6. सत्यनिष्ठा में नैतिक नेतृत्व की आवश्यकता समय की मांग है

सत्यनिष्ठा की संस्कृति का विकास करने के लिए समाज और राष्ट्र को नैतिक नेतृत्व की आवश्यकता भी होती है। जब कभी नेतृत्व सत्य और ईमानदारी के सिद्धांतों पर आधारित होता है, और उस पर ध्यान केंद्रित करता है तो इत्तका प्रभाव समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन लाता है। राष्ट्र के नेता, चाहे वे राजनीतिक हों, सामाजिक हों, या आर्थिक क्षेत्र के हों, अगर सभी सत्यनिष्ठा से अपने अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं, तो राष्ट्र की समृद्धि सुनिश्चित होने पर आश्चर्य नहीं होगा।

वर्तमान समय में सत्यनिष्ठा और उस पर आधुनिक चुनौतियाँ

जिस तरह दुनिया में विकास और विकास के नाम पर एक होड़ लगी हुई है, आज की दुनिया में सत्यनिष्ठा की संस्कृति को विकसित करना एक चुनौती हो गई है। आधुनिक युग में प्रतिस्पर्धा, भौतिकवाद, और व्यक्तिगत लाभ लेने की होड़ ने सत्यनिष्ठा को कमजोर बना कर रख दिया है। सोशल मीडिया, डिजिटल प्लेटफार्मों, और व्यापारिक प्रतिस्पर्धा में भी नैतिक मूल्यों की अनदेखी सब जगह हो रही है।

सारांश

सत्यनिष्ठा की संस्कृति न केवल समाज को नैतिकता के उच्चतम स्तर पर पहुँचाती है, अपितु उस राष्ट्र की समृद्धि का भी एक मजबूत आधार बनती है। जब समाज में हर व्यक्ति सत्य और ईमानदारी का पालन करता, है, तो वह समाज प्रगति और विकास की दिशा में अग्रसर होता है। इसलिए, सत्यनिष्ठा की संस्कृति को शिक्षा, नेतृत्व, और समाज के हर क्षेत्र में प्राथमिकता दी जानी चाहिए। यह न केवल व्यक्तिगत विकास का मार्ग प्रशस्त करती है, बल्कि राष्ट्र की आर्थिक, सामाजिक, और नैतिक समृद्धि का भी आधार बनती है।

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

जिस राष्ट्र का आधार सत्य है, वहीं शिव का वास है, शिव अर्थात संपूर्णता, समृद्धि और शाश्वत भाव !

देश की संस्कृति और समाज में प्रगति, विकास, और वीर सपूतों के द्वारा दी गई बलिदानियों पर यह रचना भी मेरे द्वारा लिखी गई है।

है कई नदियों का संगम अनेक पर्वत श्रृंखलाएं जहां,
है विविध परंपरागत वेशभूषाएं, और अनेक भाषाएं जहां,
हैं किए अपने प्राण न्यौछावर वीर सपूतों ने भी यहां,
देश सेवा के लिए लोगों ने अपनी दी आहुतियां जहां,
दिलों पर है छोड़ी वीरों ने अमिट छाप व बलिदानियां,
तब जाकर मिल पाया. हमें स्वतंत्र, सुंदर भारत यहां !

"हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है।"

– मैथिलीशरण गुप्त

सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि

– एम. कीर्ति,
युनिको हाऊसिंग फाइनेंस प्राइवेट लिमिटेड
तृतीय पुरस्कार, निबंध प्रतियोगिता

सत्यनिष्ठाः राष्ट्रीय समृद्धि का अदृश्य इंजन

जब मैं सत्यनिष्ठा पर विचार करती हूँ, तो यह मुझे अमूर्त आदर्श नहीं, बल्कि एक शांत, निरंतर शक्ति प्रतीत होती है – एक स्थिर शक्ती जो हमें जीवन की रोजमर्रा की स्थितियों से गुजरने के लिए प्रेरित करती है। सत्यनिष्ठा दिखावा या दिखावटी नहीं होती। यह वह छोटे–छोटे फैसले हैं, जो पहली नजर में महत्वहीन लग सकते हैं लेकिन समय के साथ, महत्वपूर्ण हो जाते हैं। यह उस समय दृढ़ता से खड़े रहने के संबंध में है जब परिस्थितियां आपको संतुलन से बाहर ले जाने का प्रयास करें। लेकिन हम अक्सर सत्यनिष्ठा के बारे में इस तरह नहीं सोचते। इसके बजाय, हम इसे एक नैतिक शिष्टता के रूप में खारिज कर देते हैं, जो केवल संतों और दार्शनिकों के लिए उपयोगी है।

फिर भी, जितना मैं इसके बारे में सोचती हूँ, उतना ही मुझे एहसास होता है कि सत्यनिष्ठा वह डोर है जो समाज को एक साथ बांधे रखती है। यह लोगों के बीच एक अलिखित समझौता है, जो कहता है: हम सभी सही कार्य करने का प्रयत्न करेंगे, तब भी जब कोई न देख रहा हो। सवाल यह है कि यह व्यक्तिगत प्रतिबद्धता राष्ट्रीय समृद्धि जैसी भव्य चीज में कैसे तब्दील होती है? क्या सत्यनिष्ठा और एक राष्ट्र की समृद्धि के बीच कोई सीधा संबंध है? मेरा मानना है कि इसका जवाब छोटे–छोटे कामों, रोजमर्रा के फैसलों के संचय में है, जो मिलकर एक राष्ट्र के निर्माण की नींव रखते हैं।

दैनिक जीवन में सत्यनिष्ठा

एक नियमित दोपहर की बात है जब मैंने खुद स्थानीय डाकघर में कुछ ऐसा भेजने के लिए जो बहुत कीमती था लाइन में खड़ी थी। मैं इंतजार कर रही थी, कि एक व्यक्ति एक बड़े आकार के पैकेज के साथ अंदर घुस आया, और हम सभी से पहले उसे जाने दिया जाए कहने लगा। "यह अत्यावश्यक है" उसने समझाया, हालांकि यह शब्द अक्सर बहुत हल्का होता है। क्लर्क हिचकिचाया, अनिश्चित, और उस पल में, मुझे एक अजीब तनाव महसूस हुआ। क्या मुझे बोलना चाहिए? क्या मुझे उसे आगे जाने देना चाहिए? क्या सत्यनिष्ठा का अर्थ कतार जैसी तुच्छ चीज में निष्पक्षता सुनिश्चित करना है?

बात यह है कि सत्यनिष्ठा शायद ही कभी नाटकीय, जीवन को बदल देने वाले क्षणों में दिखाई देती है। यह खुद को दिखावे से घोषित नहीं करती। इसके बजाय, यह रोजमर्रा की जिंदगी की छोटी–छोटी दरारों में घुस जाती है– जैसे यह तय करना कि किसी को लाइन में आगे निकलने देना है या नहीं। हर छोटा–मोटा चुनाव पिछले चुनाव पर आधारित होता है, जब तक कि वे एक पैटर्न नहीं बना लेते। आज, मैं किसी को लाइन में आगे निकलने देता हूँ। कल, शायद मैं किसी बड़े उल्लंघन को भी होने दूँ। अंतर बहुत बारीक है, और सत्यनिष्ठा, जैसा कि मैं इसे देखती हूँ, सचेत रूप से और लगातार लिए गए निर्णयों की एक श्रृंखला से ज़्यादा कुछ नहीं है।

व्यक्तिगत से राष्ट्रीय सत्यनिष्ठा तक

इससे हम एक बड़े सवाल पर आते हैं: सत्यनिष्ठा के ये सभी व्यक्तिगत कार्य – या उनकी कमी – एक राष्ट्र को कैसे प्रभावित करते हैं? क्या किसी देश की सत्यनिष्ठा का अंदाजा उसके लोगों के बड़े या छोटे कार्यों के योग से लगाया जा सकता है? व्यक्तिगत स्तर पर होने वाली हानि की कल्पना करना मुश्किल नहीं है, यह लहरें उत्पन्न करती है। जो सुविधा या नैतिक चूक के रूप में आरंभ होता है और जल्द ही पूरे सिस्टम में पतन का रूप ले लेता है। जब आप लोगों के एक–दूसरे पर भरोसे को खत्म करना शुरू करते हैं – चाहे वह सीमाओं को काटकर हो या बड़े वादों को तोड़कर – तो पूरा सामाजिक ताना–बाना कमजोर हो जाता है।

उदाहरण के लिए, सरकारी संस्थाओं पर विचार करें, भ्रष्टाचार पर उंगली उठाना और अपनी असफलताओं के लिए उसे दोषी ठहराना स्वाभाविक है। लेकिन, भ्रष्टाचार हमेशा बड़े घोटालों से आरंभ नहीं होता। यह अक्सर छोटे–छोटे समझौतों, छोटे–छोटे क्षणों से आरंभ होता है, जहाँ दूसरी तरफ देखना आसान होता है। और धीरे–धीरे, सुविधा की पहली शिकार सत्यनिष्ठा बन जाती है। एक ऐसी दुनिया

की कल्पना करें जहाँ डाक कर्मचारी मेल नहीं पहुँचाते, जहाँ दुकानदार ऊपर से थोड़ा–बहुत काट लेते हैं, और जहाँ वादे पूरे नहीं किए जाते। इसका नतीजा अराजकता है– एक ऐसा माहौल जहाँ भरोसा खत्म हो जाता है और राष्ट्रीय समृद्धि को बनाए रखना असंभव हो जाता है।

सत्यनिष्ठाः समृद्धि का आधार

एक लोकप्रिय धारणा है कि सत्यनिष्ठा और महत्वाकांक्षा एक दूसरे से अलग हैं, खासकर जब हम अर्थव्यवस्था की बात करते हैं। हमें अक्सर बताया जाता है कि समाज में आगे बढ़ने के लिए आपको समझौते करने की जरूरत है, कि अगर आप जीतना चाहते हैं तो आपको बहुत ज्यादा सत्यनिष्ठ नहीं होना चाहिए। लेकिन यह दृष्टिकोण महत्वपूर्ण सत्य को नजरअंदाज करता हैः सत्यनिष्ठा समृद्धि की दुश्मन नहीं है, बल्कि इसकी नींव है। बिना भरोसे के कोई भी अर्थव्यवस्था फल–फूल नहीं सकती।

एक ऐसे बाजार की कल्पना करें जहाँ अनुबंध अर्थहीन हों और मुद्रा अविश्वसनीय हो। व्यवसाय ध्वस्त हो जाते हैं, व्यापार ठप्प हो जाता है और नागरिक अकेलेपन के शिकार हो जाते हैं। किसी देश की अर्थव्यवस्था के फलने–फूलने के लिए, उसके नागरिकों, उसकी संस्थाओं और उसकी प्रणालियों के बीच एक अंतर्निहित स्तर का विश्वास होना चाहिए। हमें यह विश्वास करने की जरूरत है कि लोगों का सम्मान किया जाएगा और कानूनों को निष्पक्ष रूप से लागू किया जाएगा। इसके बिना, राष्ट्रीय समृद्धि असंभव है। यह स्थिरता की व्यावहारिक आवश्यकता के संबंध में है।

उन देशों का उदाहरण लें जिन्होंने स्थायी आर्थिक सफलता हासिल की है। अक्सर, वे सबसे ज्यादा संसाधन या सबसे ज्यादा नवोन्मेषी उद्योग वाले देश नहीं होते। इसके बजाय, वे ऐसे स्थान हैं जहाँ कानून के शासन का सम्मान किया जाता है, जहाँ नैतिक प्रथाओं को प्रोत्साहित किया जाता है, और जहाँ नागरिक उन प्रणालियों पर भरोसा करते हैं जिनमें वे रहते हैं। उनकी संपत्ति सिर्फ पैसों या प्राकृतिक संसाधनों में नहीं मापी जाती – यह सत्यनिष्ठा की अदृश्य मुद्रा में निहित है।

सत्यनिष्ठा की मृगतृष्णाः राष्ट्र की ब्रांडिंग

लेकिन यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि सत्यनिष्ठा अक्सर वास्तविकता से ज्यादा नारे की तरह होती है। हम ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ निगम चुपचाप मजदूरों का शोषण करते हुए विज्ञापन देते हैं, जहाँ राजनेता बंद दरवाजों के पीछे संदिग्ध सौदे करते हुए भी पारदर्शिता की वकालत करते हैं। सत्यनिष्ठा, कुछ जगहों पर, एक ब्रांड बन गई है– एक चमकदार मुखौटा जिसके नीचे कुछ बहुत ही गहरा छिपा हुआ है।

इसके बावजूद, सच्ची सत्यनिष्ठा की मांग को नकारा नहीं जा सकता। प्रत्येक घोटाला – चाहे वह राजनीतिक, कॉर्पोरेट, या निजी हो – आक्रोश भड़काता है क्योंकि, गहराई से, हम जानते हैं कि सत्यनिष्ठा मायने रखती है। यहां तक कि जब हम इसे मूर्त रूप देने में असफल हो जाते हैं, तब भी हम इसके लिए लालायित रहते हैं। हम जो होने का दावा करते हैं और वास्तव में हम जो हैं, उसके बीच का अंतर बहुत ही परेशान करने वाला है।

राष्ट्र की सत्यनिष्ठाः सभी की जिम्मेदारी

सत्यनिष्ठा की संस्कृति का निर्माण रातों–रात नहीं होता, और यह निश्चित रूप से संयोग से नहीं होता। इसकी शुरुआत घर से, स्कूलों से, व्यवसायों से और सरकारी कार्यालयों से होती है। यह ऐसी चीज है जिसे पोषित करने, सिखाने और पुरस्कृत करने की आवश्यकता है। एक समाज केवल बेईमानी को दंडित नहीं कर सकता, उसे सत्यनिष्ठा का जश्न मनाना होगा, मुखबिरों की रक्षा करनी होगी और ऐसी प्रणालियाँ बनानी होंगी जहाँ अखंडता आदर्श हो, अपवाद नहीं।

ऐसे देश हैं जो भ्रष्टाचार को कम करने और अधिक नैतिक व्यवस्था बनाने में सफल रहे हैं। उनमें क्या समानता है? उन्होंने ऐसे वातावरण बनाए, जहाँ सत्यनिष्ठा सामाजिक ताने–बाने में समाहित है। वे उन लोगों की रक्षा करते हैं जो अनैतिक व्यवहार की निंदा करते हैं, वे पारदर्शिता को पुरस्कृत करते हैं, और वे सुनिश्चित करते हैं कि सत्यनिष्ठा सिर्फ एक अच्छा विचार नहीं है बल्कि एक व्यावहारिक आवश्यकता है।

सत्यनिष्ठा आपसे शुरू होती है

अंततः किसी राष्ट्र की समृद्धि केवल उसकी सरकार या निगमों द्वारा निर्धारित नहीं होती। इसका निर्धारण उसके नागरिकों के कार्यों से होता है, अर्थात उन विकल्पों से जो हम प्रतिदिन चुनते हैं। सत्यनिष्ठा शून्य में नहीं होती, यह लाखों व्यक्तिगत निर्णयों का परिणाम होती है।

यह इस बारे में है कि हम क्या करने का चुनाव करते हैं, जब कोई हमें नहीं देख रहा होता, जब हमारे कार्यों के कोई तत्काल परिणाम नहीं होते।

असली सवाल यह है कि: क्या हम तब भी सत्यनिष्ठ बने रहते हैं जब यह असुविधाजनक हो? क्या हम निष्पक्षता, सत्यनिष्ठा और सच्चाई को तब भी चुन सकते हैं जब लोग हमें ऐसा न करने के कारण बताते है? ये सिर्फ नैतिक सवाल नहीं हैं– ये एक समृद्ध समाज की नींव हैं। एक राष्ट्र की सफलता उसके नागरिकों की सही काम करने की प्रतिबद्धता पर निर्भर करती है, भले ही यह कठिन हो।

निष्कर्ष: सत्यनिष्ठा का धीमा, स्थिर कार्य

सत्यनिष्ठा की संस्कृति का निर्माण एक धीमी, श्रमसाध्य प्रक्रिया है। यह अचानक नहीं होता, और निश्चित रूप से यह दुर्घटनावश भी नहीं होता। इसके लिए प्रयास, धैर्य और सबसे बढ़कर, निरंतरता की आवश्यकता होती है। सत्यनिष्ठा केवल एक नैतिक गुण नहीं है, यह एक रणनीतिक विकल्प है। यह दीर्घकालिक विचार के बारे में है, ऐसी व्यवस्था के निर्माण के बारे में है जो सत्यनिष्ठा को दंडित करने के बजाय पुरस्कृत करती है।

किसी देश की समृद्धि सिर्फ धन या संसाधनों से नहीं बनती। यह विश्वास, निष्पक्षता और न्याय से बनती है। और ये चीजें अमूर्त आदर्श नहीं हैं– ये मूर्त वास्तविकताएँ हैं, जो आम लोगों के दैनिक कार्यों से बनती हैं। अंत में, सत्यनिष्ठा की संस्कृति सिर्फ नियमों का पालन करने से कहीं ज़्यादा है। यह एक ऐसा समाज के निर्माण के संबंध में है जहाँ विश्वास अर्जित किया जाता है, जहाँ न्याय कायम रहता है, और जहाँ सभी के लिए समृद्धि विकसित हो सके।

अरुण यह मधुमय देश हमारा

अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।।
सरल तामरस गर्भ विभा पर, नाच रही तरुशिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर, मंगल कुंकुम सारा।।
लघु सुरधनु से पंख पसारे, शीतल मलय समीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किए, समझ नीड़ निज प्यारा।।
बरसाती आँखों के बादल, बनते जहाँ भरे करुणा जल।
लहरें टकरातीं अनन्त की, पाकर जहाँ किनारा।।
हेम कुम्भ ले उषा सवेरे, भरती ढुलकाती सुख मेरे।
मंदिर ऊँघते रहते जब, जगकर रजनी भर तारा।।

– जयशंकर प्रसाद

विश्व पर्यावास दिवस – 2024 की कुछ झलकियां

पंजी. सं. दिल्ली इन/2001/6138

36 हमारा प्रयास हो सबका आवास

राष्ट्रीय आवास बैंक
NATIONAL HOUSING BANK

लोकहित प्रकटीकरण और मुखबिर संरक्षण संकल्प, 2004 (पिडपी)

केन्द्रीय सतर्कता आयोग

पिडपी क्या है

- पिडपी भारत सरकार का एक संकल्प है।
- इसके अंतर्गत दर्ज की गई सभी शिकायतों के शिकायतकर्ताओं की पहचान गोपनीय रखी जाती है।

पिडपी शिकायत कैसे की जाती है

- सचिव, केन्द्रीय सतर्कता आयोग को शिकायत भेजी जाए और लिफ़ाफ़े पर ''पिडपी'' लिखा होना चाहिए।
- शिकायतकर्ता का नाम और पता लिफ़ाफ़े पर नहीं लिखा होना चाहिए अपितु बंद लिफाफे के अंदर पत्र में होना चाहिए।

शिकायतकर्ता की पहचान गोपनीय रहे, ऐसा सुनिश्चित करने के लिए दिशानिर्देश

- जो शिकायतें व्यक्तिगत रूप से शिकायतकर्ता से संबंधित है या अन्य अधिकारियों को संबोधित हैं, उनमें पहचान प्रकट हो सकती है।
- शिकायतें खुली स्थिति में या सार्वजनिक पोर्टल पर नहीं भेजी जानी चाहिए।
- शिकायत में पहचान प्रकट करने वाले दस्तावेज़ संलग्न नहीं करने चाहिए अथवा उनका उल्लेख नहीं किया जाना चाहिए जैसे: आर.टी.आई. के अंतर्गत प्राप्त दस्तावेज।
- लिफाफे के अंदर पत्र पर नाम और पता पुष्टि के प्रयोजन से लिखा होना चाहिए।
- जिन शिकायतों की पुष्टि प्राप्त नहीं होती है, उन्हें बंद कर दिया जाता है।
- अनाम/छद्मनाम पत्रों पर विचार नहीं किया जाता है।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2024

अधिक जानकारी के लिए https://www.cvc.gov.in को देख सकते हैं

Follow us on /nhb

https://nhb.org.in

पृष्ठ सज्जा एवं प्रिंटिंग: जे.के. ऑफसेट ग्राफिक्स प्रा.लि., नई दिल्ली–110020

मुद्रण की तिथि : 31/12/2024

प्रधान कार्यालय

राष्ट्रीय आवास बैंक, कोर 5–ए, भारत पर्यावास केंद्र, 3–5 तल, लोधी रोड नई दिल्ली– 110003
टेली : 011–3918 7000 वेबसाइट : **http://www.nhb.org.in**

क्षेत्रीय कार्यालय

नई दिल्ली, मुम्बई, अहमदाबाद, बैंगलूरू, हैदराबाद, कोलकाता, भोपाल, चेन्नई, लखनऊ, गुवाहाटी, रायपुर, चंडीगढ़, जयपुर, पटना, रांची, भुवनेश्वर, तिरुवनंतपुरम

राष्ट्रीय आवास बैंक
NATIONAL HOUSING BANK